Astha Arya

जन्मतिथिः	11 October 2009 Sunday
जन्म समयः	04:10 AM
जन्म स्थानः	Jamshedpur (Bihar), India
Latitude:	22.47N Longitude: 86.12E
अयनांशः	एन सी लाहिरी 23:59:35
स्थानीय मानक समयः	04:24:48
साम्पातिक कालः	5:43:25
स्थानीय समय संशोधनः	+14:48
तिर्यकः	23.4

अवकहड़ा चक्र

लग्न	कन्या
लग्नपति	बुध
राशी	मिथुन
राशी स्वामी	बुध
नक्षत्र	अरिद्रा
नक्षत्र स्वामी	राहु
चरण	4
तिथि	अष्टमी कृष्ण
पाया	ताँबा
सूर्य सिद्धांत योग	परिघ
करण	बलब
वर्ण	शूद्र
तत्व	जल
वश्य	मानव
योनि	स्वान(स्त्री.)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	आदि
विहग	भेरुन्ड
प्रथम अक्षर	कु, घ, , छ
सूर्य राशि	तुला
डेकानेट	2

घात चक्र

राशी	धनु
माह	आषाढ़
तिथि	2,7,12
दिवस	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
प्रहर	3
लग्न	कर्क
योग	परिघ
करण	कौलव

शुभ अशुभ विचार

सौभाग्य अंक	2
शुभांक	2,4,5,8
अशुभ अंक	1,7,9
शुभ वर्ष	11,20,29,38,47
शुभ दिन	बुधवार, शुक्रवार
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
अशुभ ग्रह	मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृष सिंह तुला
शुभ लग्न	धनु, मीन, वृष, मकर
शुभ धातु	कांस
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ समय	सूर्योदय के दो घंटे बाद
शुभ दिशा	उत्तर

Generated by Horoscope Explorer (c) Public Software Library India Pvt Ltd - www.itbix.com

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	नक्षत्राधिप	पद	दिशा	अवस्था
लग्न	कन्या	02:11:04	उत्तरा	रवि	2		––
रवि	कन्या	23:45:50	चित्रा	मंगल	1	मार्गी	––
बुध	कन्या	07:07:16	उत्तरा	रवि	4	मार्गी	तुंगस्थ
शुक्र	कन्या	01:02:45	उत्तरा	रवि	2	मार्गी	नीचस्थ
मंगल	कर्क	03:04:58	पुनर्वसु	गुरु	4	मार्गी	नीचस्थ
गुरु	मकर	23:10:54	श्रवण	चन्द्र	4	वक्री	––
शनि	कन्या	03:51:11	उत्तरा	रवि	3	मार्गी	––
चन्द्र	मिथुन	18:10:00	अरिद्रा	राहु	4	मार्गी	––
राहु	मकर	02:27:33	उत्तराषाढ़	रवि	2	वक्री	––
केतु	कर्क	02:27:33	पुनर्वसु	गुरु	4	वक्री	––
इन्द्र	कुम्भ	29:44:22	पूर्व भाद्रपद	गुरु	3	वक्री	––
वरुण	मकर	29:52:00	धनिष्ठा	मंगल	2	वक्री	––
रुद्र	धनु	06:53:21	मूला	केतु	3	मार्गी	––

लग्न कुन्डली

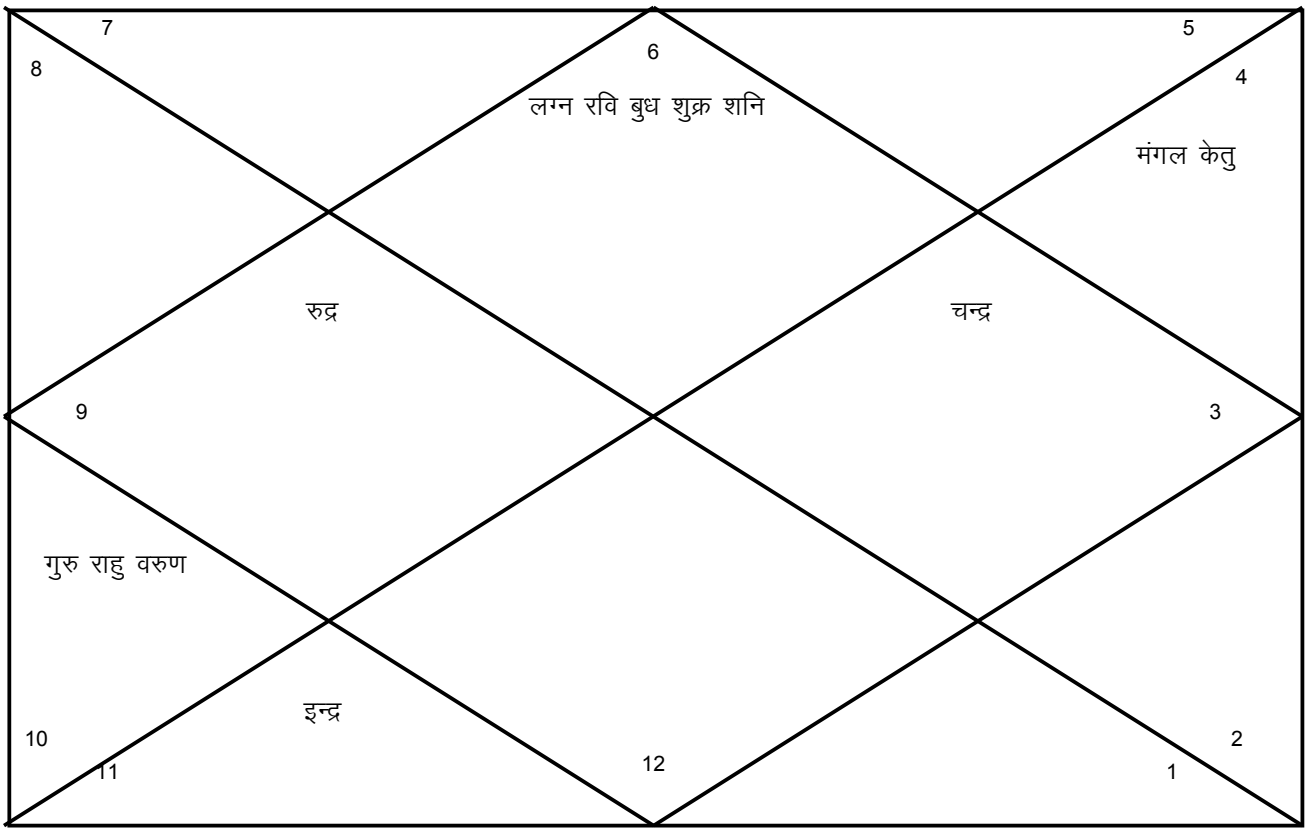

लग्न

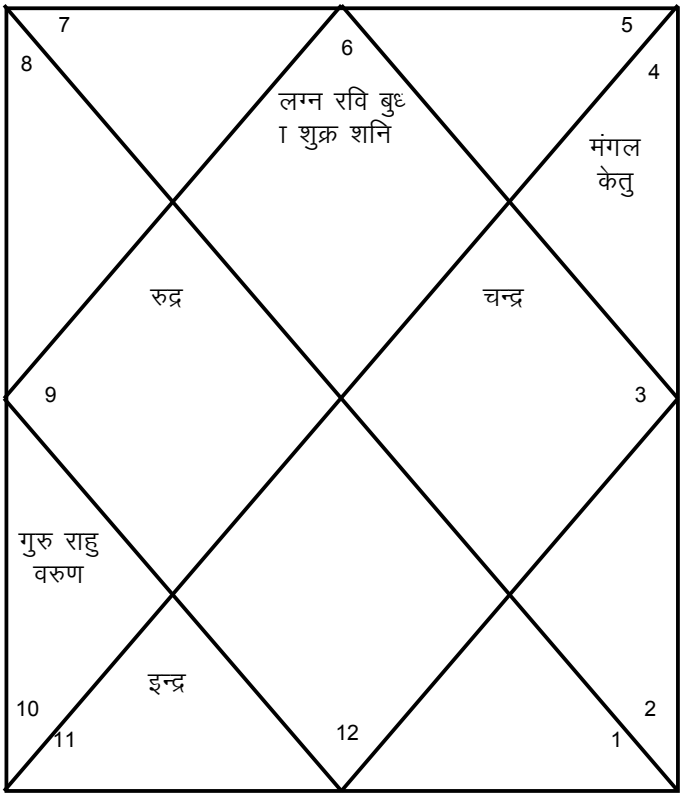

होरा

धनसम्पदा

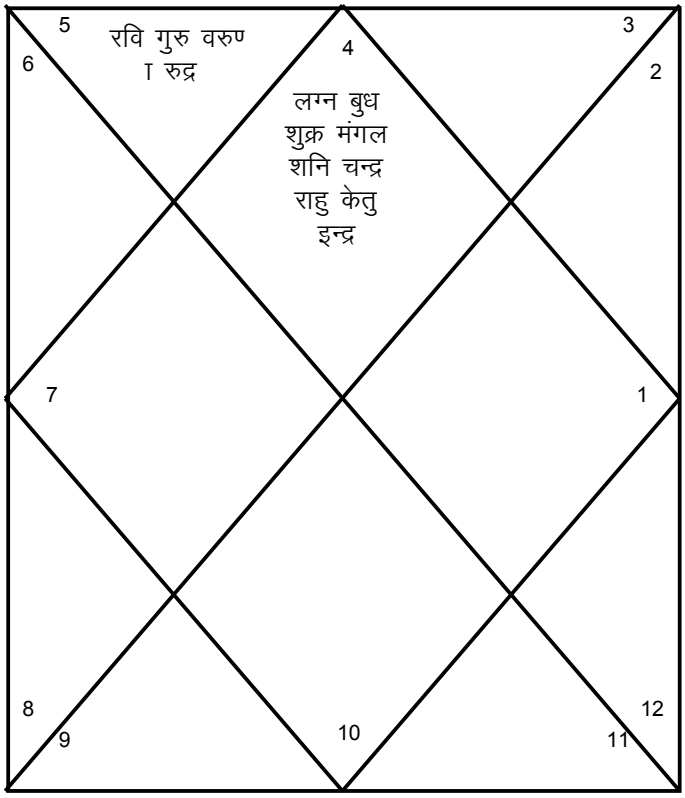

द्रेक्कान

सहोदर

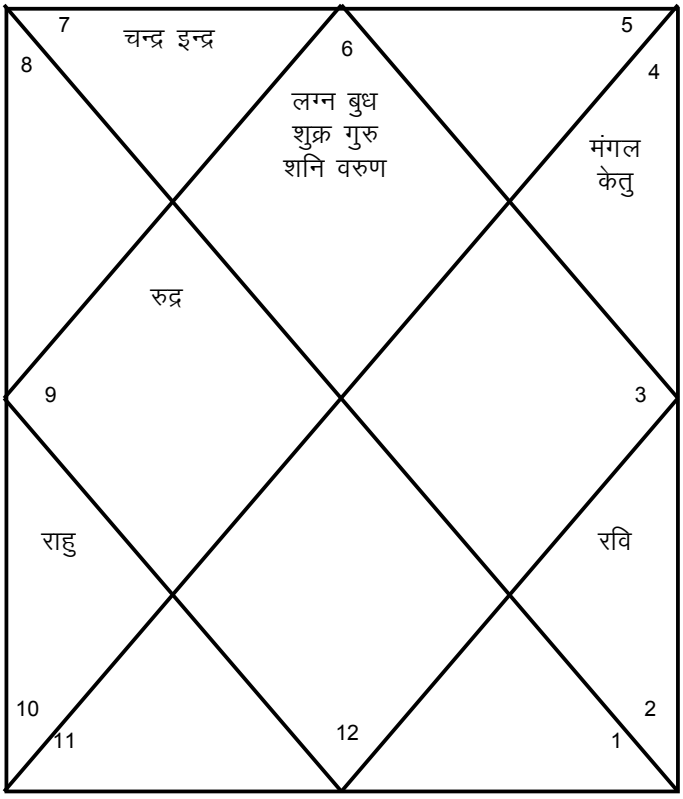

चतुर्थांश

भाग्य

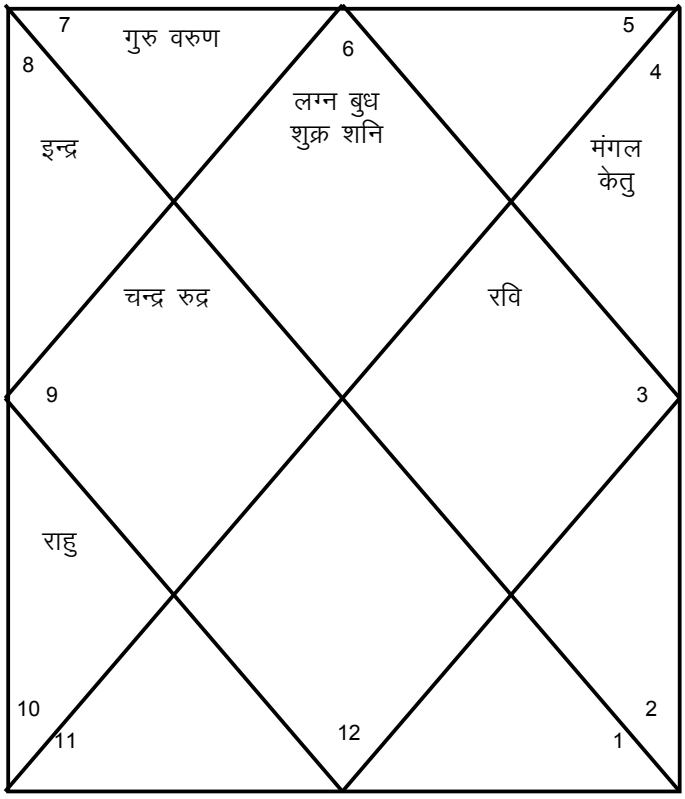

सप्तमांश सन्तति

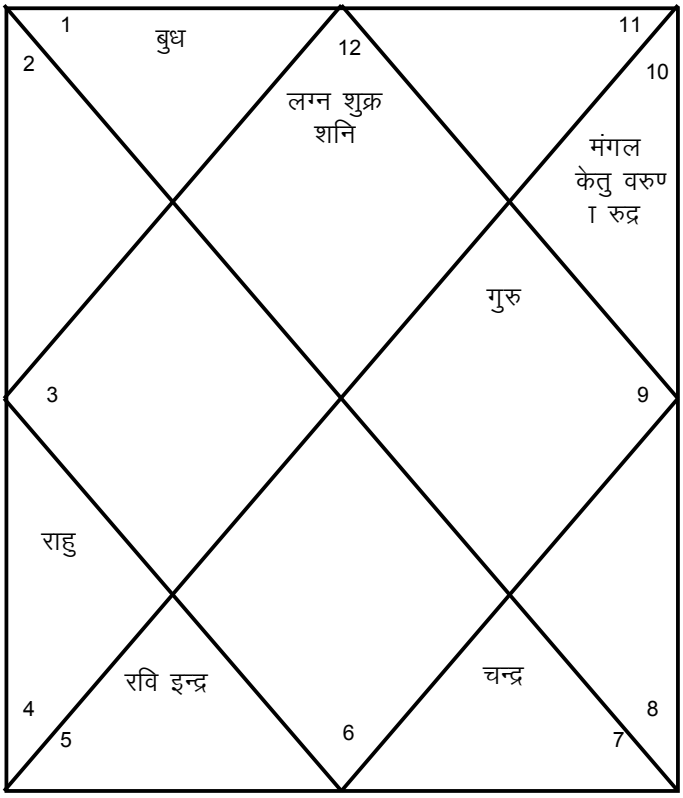

नवमांश जीवनसाथी

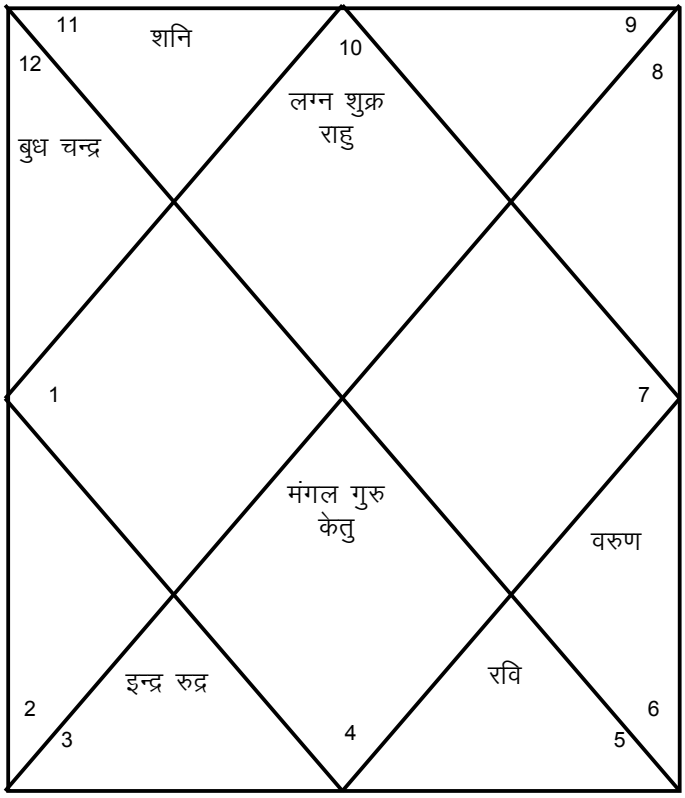

दशमांश जीविका

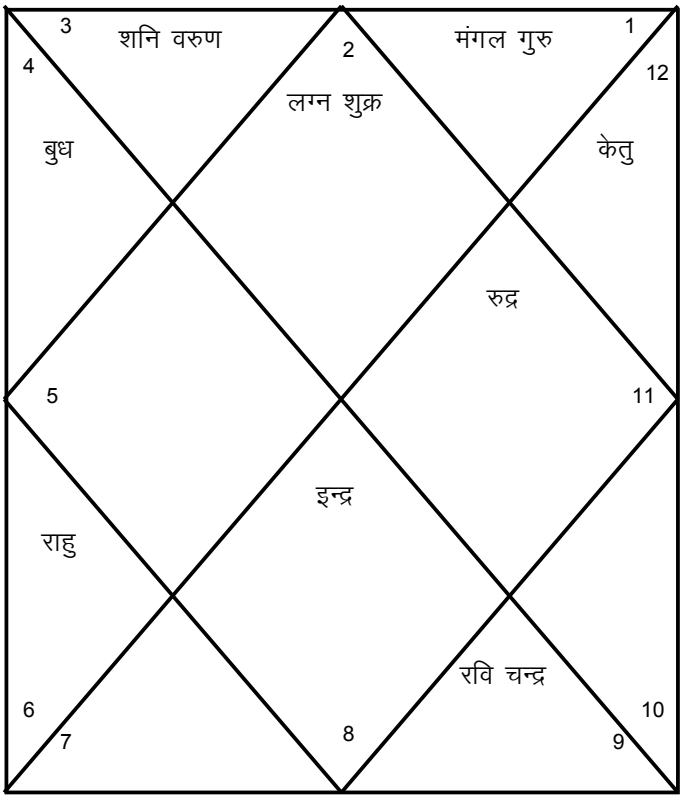

द्वादशांश माता एवं पिता

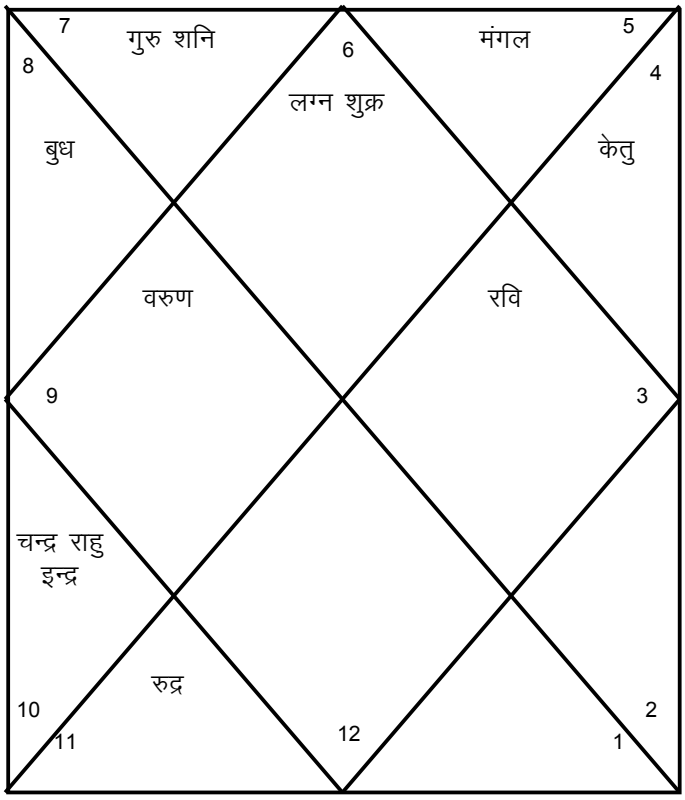

षोडशांश — वाहन

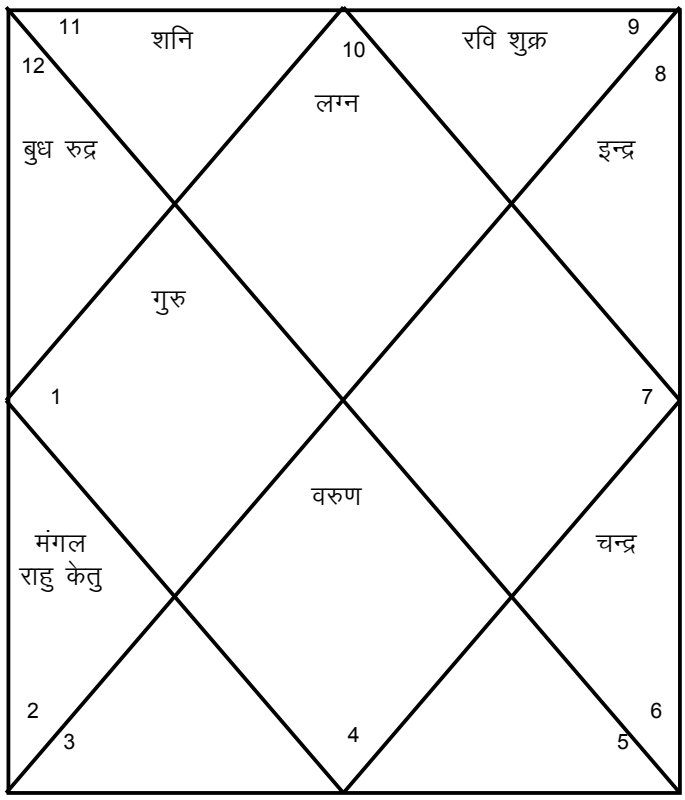

विंशांश — धार्मिक प्रवृत्ति

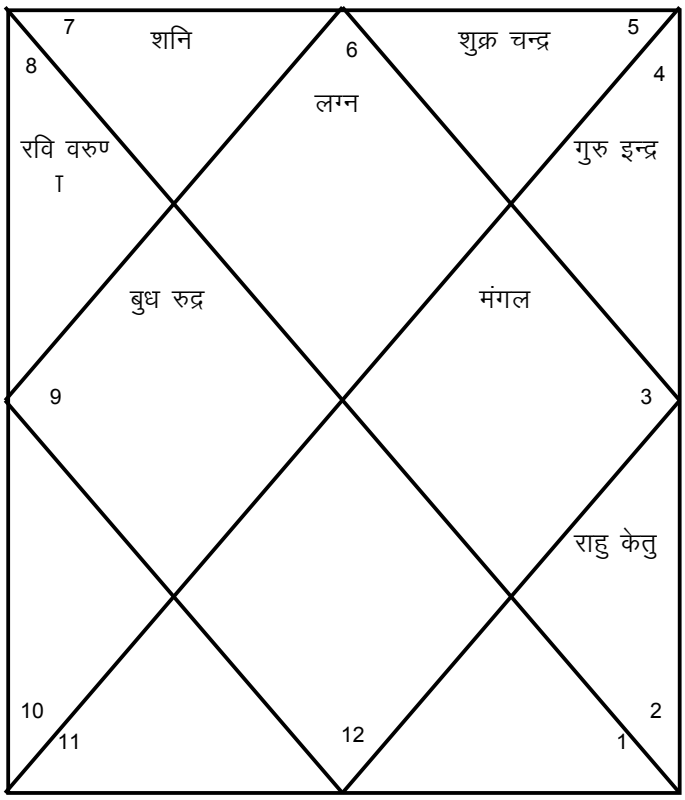

चतुर्विंशांश — शिक्षा

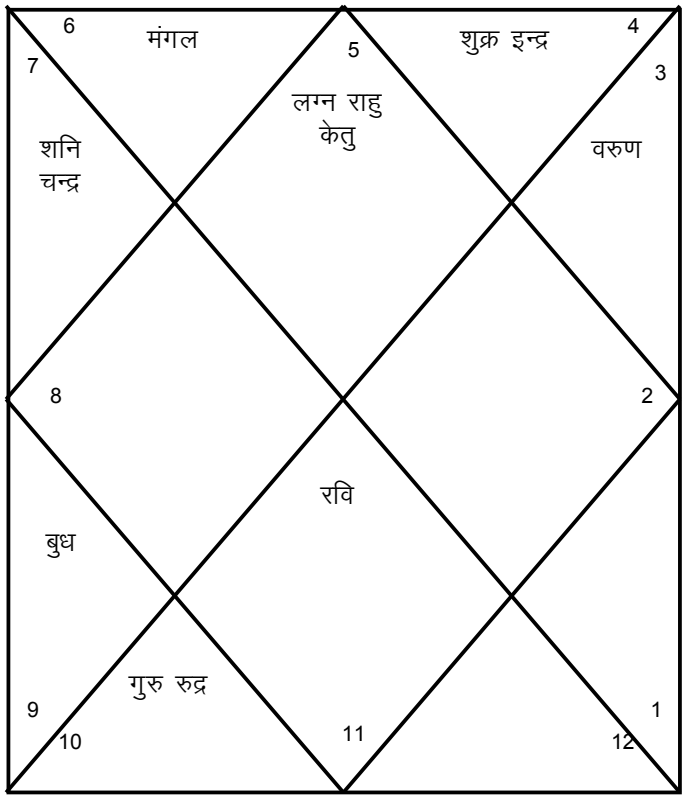

सप्तविंशांश — बल

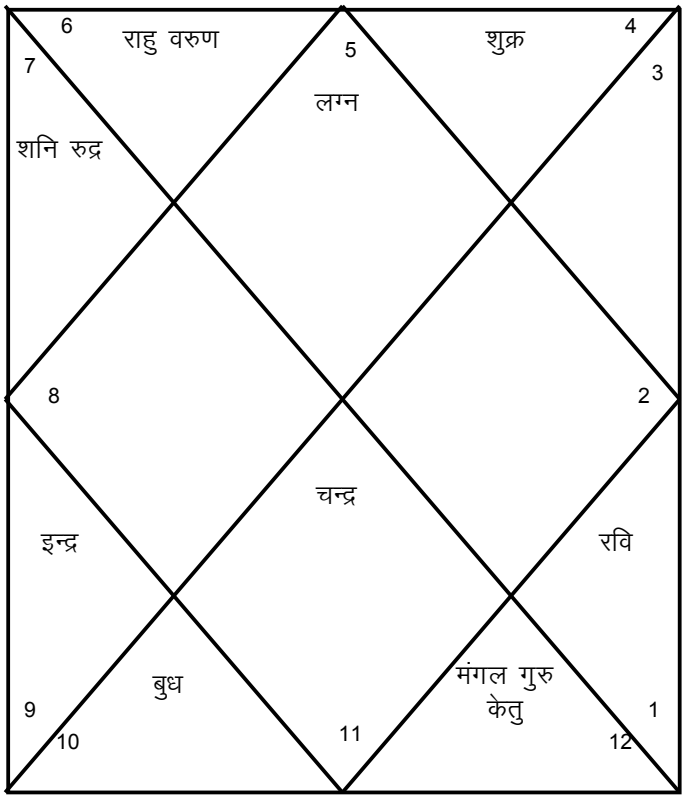

त्रिंशांश — दुर्भाग्य

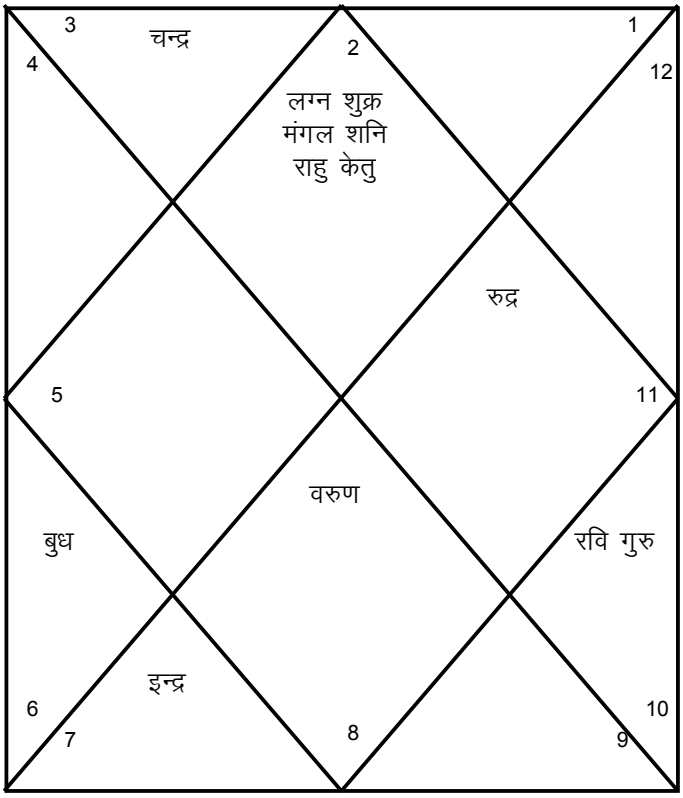

खवेदांश — शुभ फल

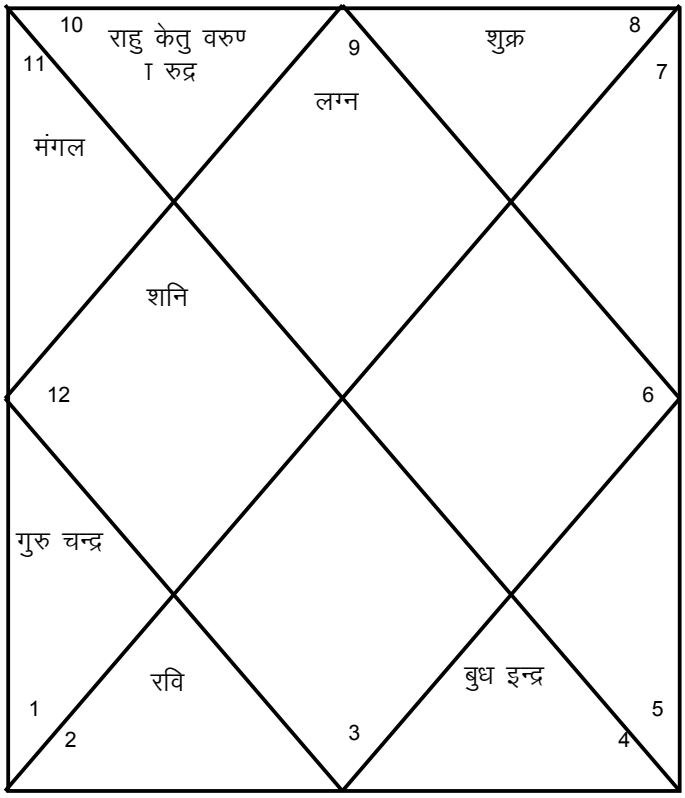

अक्षवेदांश — सार्विक कुशल

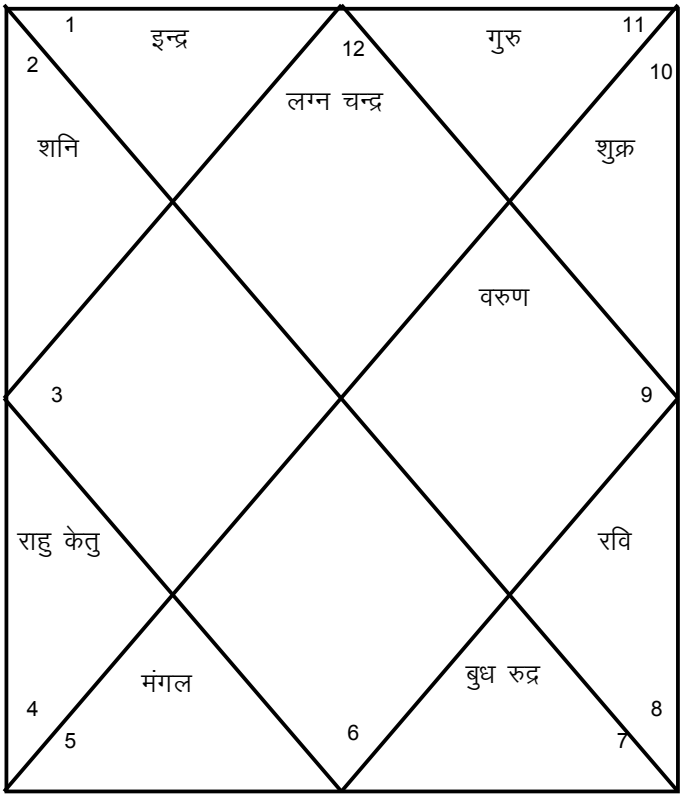

षष्टि अंश — सार्विक कुशल

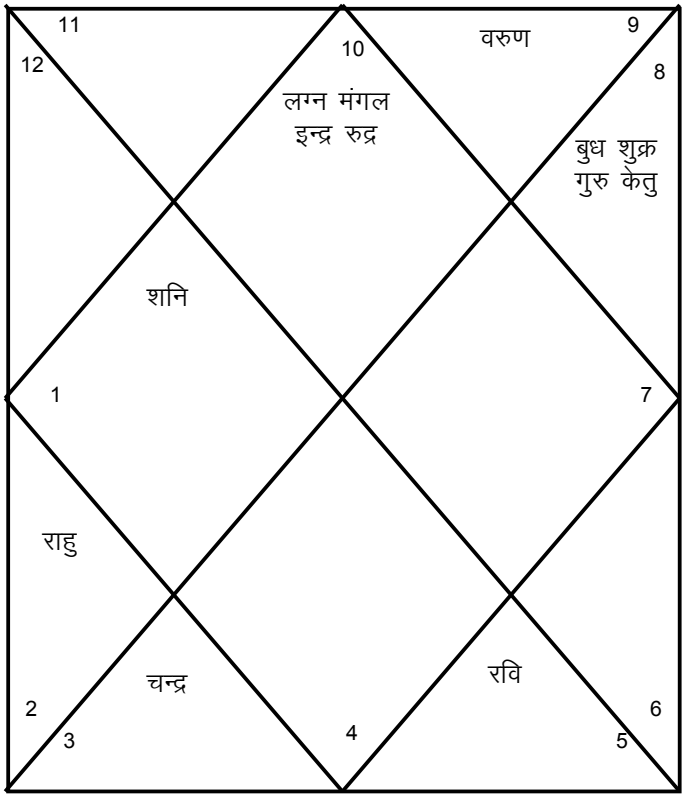

भाव सारिणी

भाव	भाव आरंभ		भाव मध्य	
1	सिंह	17:11:14	कन्या	02:11:04
2	कन्या	17:11:14	तुला	02:11:24
3	तुला	17:11:35	वृश्चिक	02:11:45
4	वृश्चिक	17:11:56	धनु	02:12:06
5	धनु	17:11:56	मकर	02:11:45
6	मकर	17:11:35	कुम्भ	02:11:24
7	कुम्भ	17:11:14	मीन	02:11:04
8	मीन	17:11:14	मेष	02:11:24
9	मेष	17:11:35	वृषभ	02:11:45
10	वृषभ	17:11:56	मिथुन	02:12:06
11	मिथुन	17:11:56	कर्क	02:11:45
12	कर्क	17:11:35	सिंह	02:11:24

भाव चलित चक्र

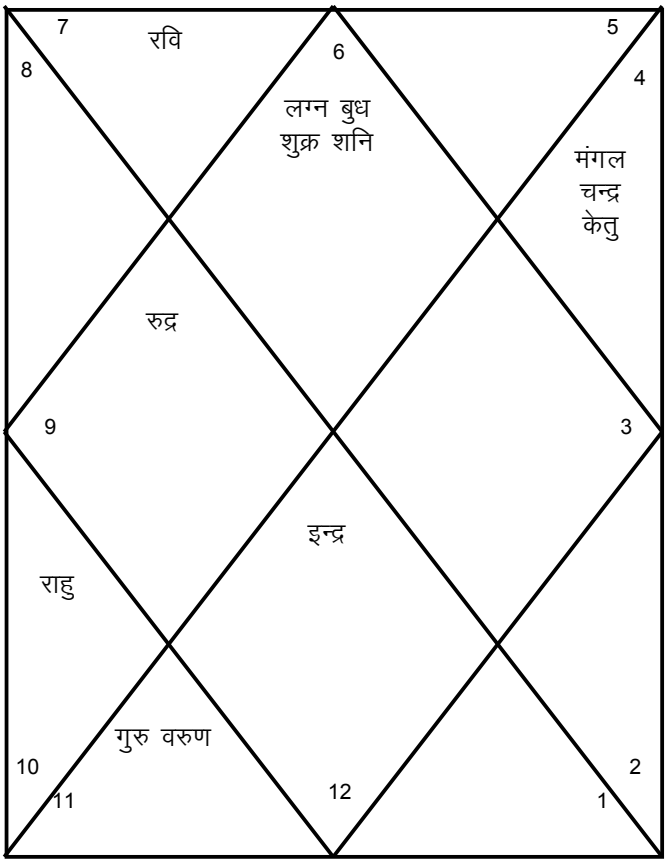

चन्द्र कुन्डली

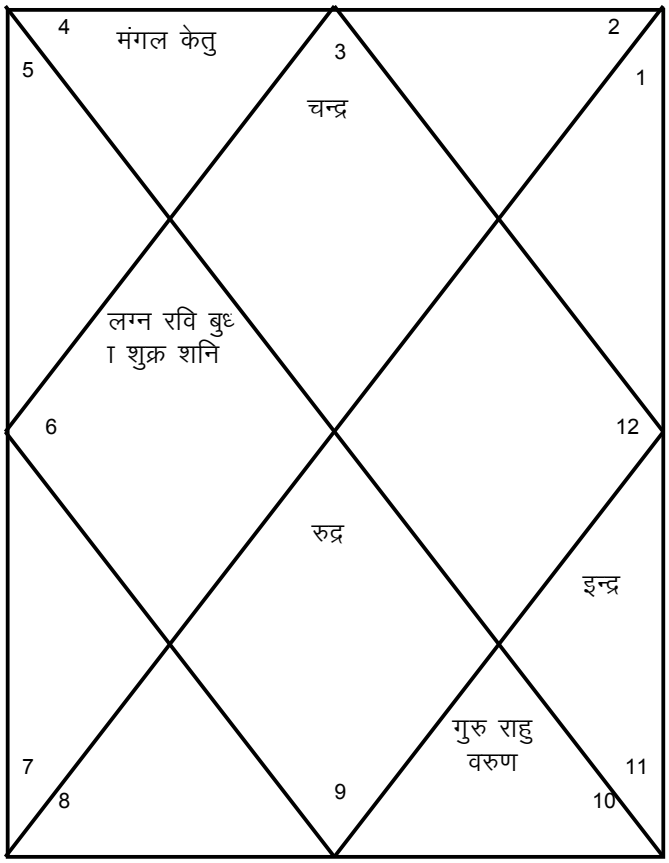

सूर्य सम्बन्धित उपग्रह

उपग्रह	स्वामी	राशी	डिग्री	नक्षत्र	चरण
धूम	मंगल	कुम्भ	07:05:50	शतभिषा	1
व्यातिपात	राहु	वृषभ	22:54:10	रोहिणी	4
परिवेश	चन्द्र	वृश्चिक	22:54:10	ज्येष्ठा	2
इन्द्रचाप	शुक्र	सिंह	07:05:50	मघा	3
उपकेतू	केतु	सिंह	23:45:50	पूर्वा	4
भूकम्प		धनु	13:45:50	पूर्वाषाढ़ा	1
उल्का		मकर	23:45:50	धनिष्ठा	1
ब्रह्मदन्ड		मेष	00:25:50	अश्विनी	1
ध्वजा		मिथुन	20:25:50	पुनर्वसु	1

वार आधारित उपग्रह (पाराशर)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	सिंह	08:45:38	रवि	मघा	3
परिधि	कन्या	20:09:15	बुध	हस्त	4
मृत्यु	वृश्चिक	00:35:20	मंगल	विशाखा	4
अर्धप्रहर	धनु	10:45:11	गुरु	मूला	4
यमकन्टक	मकर	28:21:07	शनि	धनिष्ठा	2
कोदन्ड	वृषभ	16:24:34	शुक्र	रोहिणी	2
गुलिका	मिथुन	27:58:41	बुध	पुनर्वसु	3
मन्दी	कर्क	25:16:32	चन्द्र	आश्लेषा	3

वार आधारित उपग्रह (कालीदास)

उपग्रह	राशी	डिग्री	स्वामी	नक्षत्र	चरण
कालबेला	कन्या	20:09:15	बुध	हस्त	4
परिधि	वृश्चिक	00:35:20	मंगल	विशाखा	4
मृत्यु	धनु	10:45:11	गुरु	मूला	4
अर्धप्रहर	मकर	28:21:07	शनि	धनिष्ठा	2
यमकन्टक	वृषभ	16:24:34	शुक्र	रोहिणी	2
कोदन्ड	मिथुन	27:58:41	बुध	पुनर्वसु	3
गुलिका	सिंह	08:45:38	रवि	मघा	3
मन्दी	कर्क	25:16:32	चन्द्र	आश्लेषा	3

भिन्न अष्टक वर्ग

शनि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	-	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	-	O	O	-	-	-	-	O	O	-	-	-
मंगल	O	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-	-
रवि	O	-	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
शुक्र	-	-	-	O	O	-	-	-	-	-	O	-
बुध	O	O	O	O	O	-	-	-	-	-	O	-
चन्द्र	O	-	-	-	O	-	-	O	-	-	-	-
लग्न	-	-	O	O	-	O	-	O	O	-	O	-
कुल	4	3	5	5	3	3	1	5	4	1	4	1

गुरु

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	-	-	-	-	O	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	O	-	-	O	O	-	O	O	-	O	O	O
मंगल	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	-
रवि	O	O	O	O	-	O	O	O	O	-	-	O
शुक्र	-	O	O	O	-	-	O	-	-	O	O	-
बुध	-	O	O	O	-	O	O	-	O	O	O	-
चन्द्र	O	-	-	O	-	-	O	-	O	-	O	-
लग्न	-	O	O	O	-	O	O	-	O	O	O	O
कुल	4	5	4	7	3	3	7	3	4	6	7	3

मंगल

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	O	O	O	O	-	O	-	-	O	-	-	O
गुरु	-	-	O	-	-	-	O	O	O	-	-	-
मंगल	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	-
रवि	-	-	O	O	-	-	-	O	-	O	O	-
शुक्र	O	-	-	O	O	-	-	-	-	-	O	-
बुध	-	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
चन्द्र	O	-	-	-	O	-	-	O	-	-	-	-
लग्न	-	-	O	O	-	O	-	O	-	-	O	-
कुल	4	2	4	6	3	2	2	5	2	3	5	1

रवि

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	O	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
गुरु	-	O	O	-	-	O	-	O	-	-	-	-
मंगल	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	O
रवि	O	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
शुक्र	-	-	-	-	O	-	-	-	-	-	O	O
बुध	-	O	O	O	O	-	-	O	-	O	O	-
चन्द्र	O	-	-	-	O	-	-	O	-	-	-	O
लग्न	-	-	O	O	O	-	-	O	O	-	O	-
कुल	4	5	5	5	5	3	3	4	3	2	4	5

भिन्न अष्टक वर्ग

शुक्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	O	O	O	O	-	-	-	O	O	O	-	-
गुरु	-	O	-	-	O	O	O	O	-	-	-	-
मंगल	-	O	O	-	-	O	-	O	O	-	-	O
रवि	O	-	-	O	O	-	-	-	-	-	-	-
शुक्र	O	O	O	O	-	O	O	O	O	O	-	-
बुध	-	O	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
चन्द्र	O	O	O	O	O	O	O	-	-	O	O	-
लग्न	O	O	-	O	-	O	O	O	O	O	-	-
कुल	5	7	4	6	3	5	4	6	4	5	2	1

बुध

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	O	O	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O
गुरु	-	-	O	-	O	-	-	O	O	-	-	-
मंगल	O	O	-	O	O	-	O	-	-	O	O	O
रवि	-	O	-	O	O	-	-	-	-	O	O	-
शुक्र	O	O	-	O	-	O	O	O	O	O	-	-
बुध	-	O	O	O	O	O	-	O	-	O	O	-
चन्द्र	O	-	-	O	-	O	-	O	-	O	-	O
लग्न	O	-	O	O	-	O	O	-	O	-	O	-
कुल	5	5	4	7	4	5	4	4	4	5	4	3

चन्द्र

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	-	-	-	O	-	-	-	O	-	O	O	-
गुरु	O	-	-	O	O	-	O	O	O	O	-	-
मंगल	O	O	-	-	O	O	-	O	O	-	-	O
रवि	O	-	O	O	-	-	-	O	-	-	O	O
शुक्र	-	O	O	O	-	-	-	O	O	O	-	O
बुध	O	-	O	O	-	O	-	O	O	O	-	O
चन्द्र	O	-	O	-	O	-	-	O	O	-	-	O
लग्न	-	-	O	O	-	-	-	O	-	-	O	-
कुल	5	2	5	6	3	2	1	8	5	4	3	5

लग्न

राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII
शनि	-	-	O	O	-	O	-	O	O	-	O	-
गुरु	O	O	O	O	-	O	O	O	-	O	O	-
मंगल	O	O	-	O	-	O	-	-	O	-	-	-
रवि	-	-	O	O	O	-	-	O	O	-	O	-
शुक्र	O	O	-	-	-	O	O	O	O	O	-	-
बुध	O	-	O	O	-	O	O	-	O	-	O	-
चन्द्र	O	O	-	-	O	-	-	O	-	-	-	O
लग्न	-	-	O	O	-	-	-	O	-	-	O	-
कुल	5	4	5	6	2	5	3	6	5	2	5	1

अष्टकवर्ग (शोधनपूर्व)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
रवि	4	5	5	5	5	3	3	4	3	2	4	5	**48**
चन्द्र	5	2	5	6	3	2	1	8	5	4	3	5	**49**
मंगल	4	2	4	6	3	2	2	5	2	3	5	1	**39**
बुध	5	5	4	7	4	5	4	4	4	5	4	3	**54**
गुरु	4	5	4	7	3	3	7	3	4	6	7	3	**56**
शुक्र	5	7	4	6	3	5	4	6	4	5	2	1	**52**
शनि	4	3	5	5	3	3	1	5	4	1	4	1	**39**
कुल	**31**	**29**	**31**	**42**	**24**	**23**	**22**	**35**	**26**	**26**	**29**	**19**	**337**
राहु	3	1	5	2	7	2	3	4	3	6	2	6	**44**
लग्न	5	4	5	6	2	5	3	6	5	2	5	1	**49**

त्रिकोण शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	1	3	2	1	2	1	0	0	0	0	1	1
चन्द्र	2	0	4	1	0	0	0	3	2	2	2	0
मंगल	2	0	2	5	1	0	0	4	0	1	3	0
बुध	1	0	0	4	0	0	0	1	0	0	0	0
गुरु	1	2	0	4	0	0	3	0	1	3	3	0
शुक्र	2	2	2	5	0	0	2	5	1	0	0	0
शनि	1	2	4	4	0	2	0	4	1	0	3	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
रवि	1	3	2	1	2	1	0	0	0	0	1	1
चन्द्र	0	0	4	1	0	0	0	1	2	2	0	0
मंगल	0	0	2	5	1	0	0	2	0	1	2	0
बुध	0	0	0	4	0	0	0	0	0	0	0	0
गुरु	1	0	0	4	0	0	1	0	1	3	0	0
शुक्र	0	0	2	5	0	0	0	3	1	0	0	0
शनि	0	2	4	4	0	2	0	3	1	0	3	0

शोध्य पिन्ड

पिन्ड	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह	40	48	60	32	62	50	96
राशी	105	72	89	16	54	69	144
शोध्य	**145**	**120**	**149**	**48**	**116**	**119**	**240**

नैसर्गिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	मित्र	————	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	सम	सम
शुक्र	शत्रु	मित्र	————	सम	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	सम	————	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	————	सम	मित्र	मित्र	सम
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	————	शत्रु	मित्र	शत्रु
चन्द्र	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	————	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————	शत्रु
केतु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————

तात्कालिक

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	————	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	शत्रु	शत्रु	————	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	मित्र	————	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	————	मित्र	शत्रु	मित्र
चन्द्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	————	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	————	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	————

पन्चधा

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु
रवि	————	शत्रु	परमशत्रु	परममित्र	सम	परमशत्रु	परममित्र	परमशत्रु	सम
बुध	सम	————	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र
शुक्र	परमशत्रु	सम	————	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	परममित्र
मंगल	परममित्र	सम	मित्र	————	सम	मित्र	परममित्र	परमशत्रु	सम
गुरु	सम	परमशत्रु	परमशत्रु	सम	————	शत्रु	सम	सम	शत्रु
शनि	परमशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	————	सम	सम	सम
चन्द्र	परममित्र	परममित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	————	परमशत्रु	सम
राहु	परमशत्रु	शत्रु	सम	परमशत्रु	सम	सम	परमशत्रु	————	परमशत्रु
केतु	सम	मित्र	परममित्र	सम	शत्रु	सम	सम	परमशत्रु	————

सुदर्शन चक्र

02/14/26/38/50/62/74/86/98/110 01/13/25/37/49/61/73/85/97/109 12/24/36/48/60/72/84/96/108/120

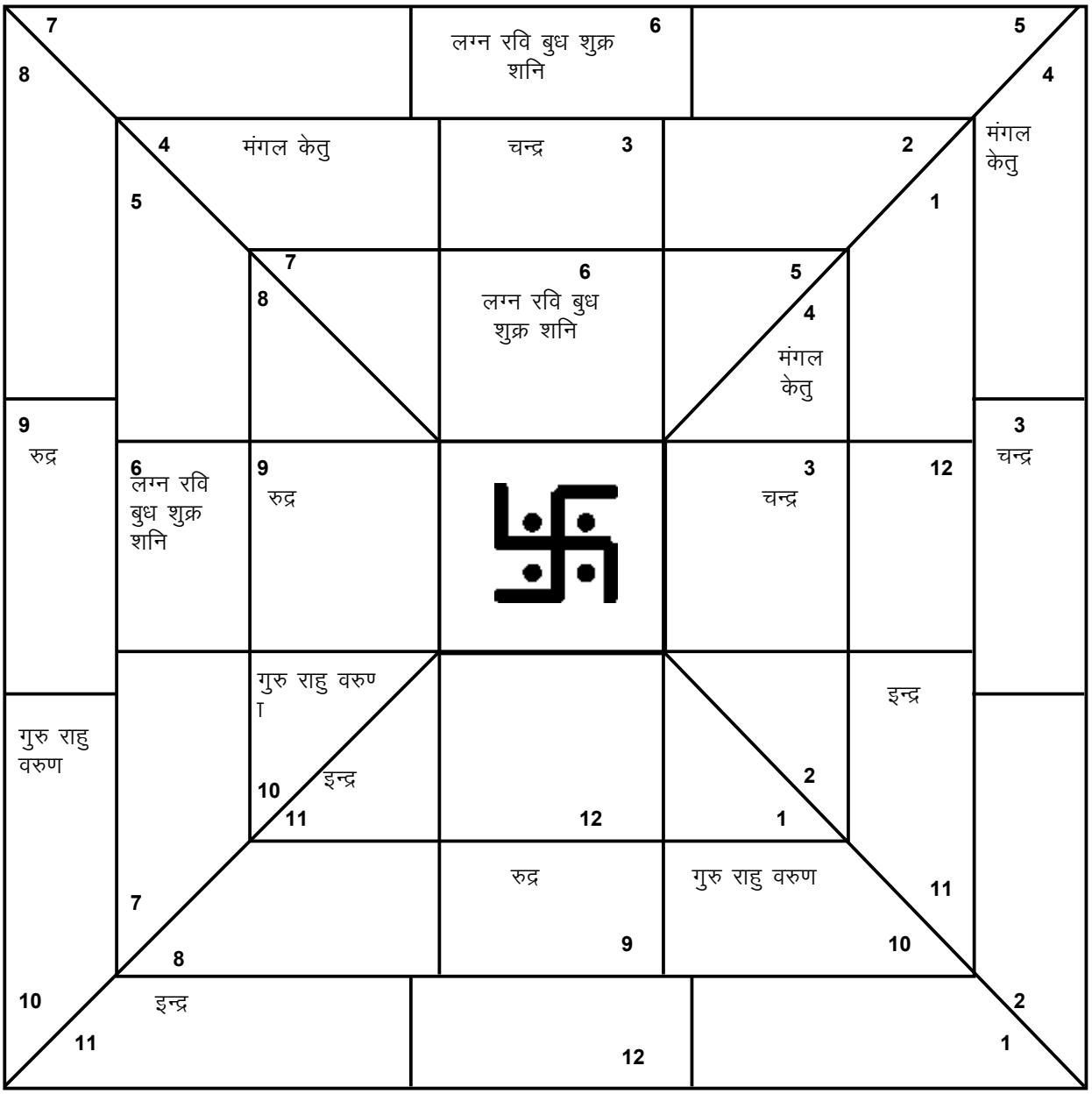

06/18/30/42/54/66/78/90/102 07/19/31/43/55/67/79/91/103 08/20/32/44/56/68/92/104

सुदर्शन चक्र में जातक का भविष्य लग्न के अलावा सूर्य व चन्द्र से भी जांचा जाता है. इसके द्वारा एक निगाह में लग्न सूर्य और चन्द्र से ग्रहों स्थिति प्राप्त की जा सकती है.

शुभ अशुभ घटनायें व उनके घटने का सही समय सुदर्शन चक्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है

कारक ग्रह

	स्थिर कारक	सप्तकारक	अष्टकारक
रवि	पिता	आत्म	अमात्य
बुध	बुद्धि	मातृ	पितृ
शुक्र	जीवनसाथी	कलत्र	कलत्र
मंगल	विक्रम	ज्ञाति	ज्ञाती
गुरु	धनसम्पदा	आमात्य	भ्रातृ
शनि	परमायु	पुत्र	पुत्र
चन्द्र	माता	भ्रातृ	मातृ
राहु	अभिलाषा	————	आत्मा
केतु	मोक्ष	————	————

ग्रहावस्था

	अवस्था 3	अवस्था 5	अवस्था 6	अवस्था 9	अवस्था 10	अवस्था 12
रवि	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	हर्षित	सभास्थ
बुध	जाग्रत	वृद्ध	गर्वित	क्षोभित	दीप्त	नेत्रपानी
शुक्र	सुप्त	मृत	क्षुदित	विकल	शान्त	नेत्रपानी
मंगल	सुप्त	मृत	क्षुदित	प्रमुदित	शान्त	नृत्यलिप्सा
गुरु	सुप्त	कुमार	लज्जित	विकल	पीड़ित	भोजन
शनि	स्वप्न	मृत	क्षुदित	दीन	शान्त	नेत्रपानी
चन्द्र	स्वप्न	वृद्ध	मुदित	शान्त	हर्षित	निद्रा
राहु	स्वप्न	मृत	मुदित	शान्त	हर्षित	सभास्थ
केतु	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुखित	शान्त	प्रकाशन

नव तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
06	07	08	09	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	01	02	03	04	05

ग्रह संयोग एवं दृष्टि

ग्रह	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र	राहु	केतु	इन्द्र	वरुण	रुद्र
लग्न	22	5	1 CNJ	59 SXT	141 BQT	2 CNJ	74 QNT	120 TRN	60 SXT	178 OPP	148 QNC	95
रवि		17	23	81	119 TRN	20	96	99	81	156	126	73 QNT
बुध			6	64	136 SQQ	3 CNJ	79	115	65	173	143 BQT	90 SQU
शुक्र				58 SXT	142 BQT	3 CNJ	73 QNT	121 TRN	59 SXT	179 OPP	149 QNC	96
मंगल					200	61 SXT	15	179 OPP	1 CNJ	237	207 QNC	154
गुरु						139	215 BQT	21	201	37	7	46 SSQ
शनि							76	119 TRN	61 SXT	176	146 BQT	93 SQU
चन्द्र								194	14	252	222 SQQ	169
राहु									180 OPP	57 SXT	27 SSX	26
केतु										237 TRN	207 QNC	154
इन्द्र											30 SSX	83
वरुण												53

Index of Words:

CNJ: Conjunction TRN: Trine SSQ: Semi Square QNT: Quintile

OPP: Opposition SXT: Sextile QNC: Quincunx BQT: Bi Quintile

SQU: Square SQQ: Sesquiquadrate SSX: Semi Sextile

ग्रह दृष्टि विचार के लिये 3 डिग्री 20 मिनिट का प्रभाव क्षेत्र लिया गया है।

पाराशरी दृष्टि

ग्रह	द्वारा दृष्ट	ग्रह	द्वारा दृष्ट
रवि	गुरु	शुक्र	गुरु
चन्द्र	शनि	शनि	गुरु
मंगल	गुरु राहु	राहु	मंगल केतु
बुध	गुरु	केतु	गुरु राहु
गुरु	मंगल केतु	लग्न	गुरु

शनि साड़े साती

शनि साड़े साती	राशी	प्रवेश	निर्गम	मूर्ति
कन्टकशनि	कन्या	10-09-2009	14-11-2011	स्वर्ण
कन्टकशनि	कन्या	16-05-2012	03-08-2012	लोहा
अष्टमाशनि	मकर	24-01-2020	28-04-2022	ताँबा
अष्टमाशनि	मकर	13-07-2022	17-01-2023	स्वर्ण
साड़ेसाती	वृषभ	08-08-2029	05-10-2029	स्वर्ण
साड़ेसाती	वृषभ	17-04-2030	30-05-2032	लोहा
जन्मशनि	मिथुन	31-05-2032	12-07-2034	रजत
साड़ेसाती	कर्क	13-07-2034	27-08-2036	लोहा
कन्टकशनि	कन्या	23-10-2038	05-04-2039	रजत
कन्टकशनि	कन्या	13-07-2039	27-01-2041	रजत
कन्टकशनि	कन्या	06-02-2041	25-09-2041	स्वर्ण
अष्टमाशनि	मकर	07-03-2049	09-07-2049	स्वर्ण
अष्टमाशनि	मकर	04-12-2049	24-02-2052	लोहा
साड़ेसाती	वृषभ	28-05-2059	10-07-2061	स्वर्ण
साड़ेसाती	वृषभ	14-02-2062	06-03-2062	रजत
जन्मशनि	मिथुन	11-07-2061	13-02-2062	स्वर्ण
जन्मशनि	मिथुन	07-03-2062	23-08-2063	ताँबा
जन्मशनि	मिथुन	06-02-2064	09-05-2064	रजत
साड़ेसाती	कर्क	24-08-2063	05-02-2064	ताँबा
साड़ेसाती	कर्क	10-05-2064	12-10-2065	ताँबा
साड़ेसाती	कर्क	04-02-2066	02-07-2066	लोहा
कन्टकशनि	कन्या	30-08-2068	04-11-2070	लोहा
अष्टमाशनि	मकर	15-01-2079	11-04-2081	लोहा
अष्टमाशनि	मकर	03-08-2081	06-01-2082	रजत
साड़ेसाती	वृषभ	18-07-2088	30-10-2088	स्वर्ण
साड़ेसाती	वृषभ	06-04-2089	18-09-2090	लोहा
साड़ेसाती	वृषभ	25-10-2090	20-05-2091	स्वर्ण
जन्मशनि	मिथुन	19-09-2090	24-10-2090	स्वर्ण
जन्मशनि	मिथुन	21-05-2091	02-07-2093	स्वर्ण
अष्टमाशनि	मकर	25-02-2108	28-07-2108	रजत

षड बल

	रवि	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	चन्द्र
उच्च बल	5.41	57.37	8.65	8.31	6.06	44.62	44.94
सप्तवर्गीय बल	101.25	61.88	71.25	142.50	56.25	71.25	121.88
दिन–रात्रि बल	15	0	30	0	0	15	15
केन्द्रादि बल	60.00	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	60.00
द्रेक्कान बल	0.00	0.00	0.00	15.00	0.00	0.00	0.00
स्थान बल	181.66	179.25	169.9	195.81	92.31	190.87	241.82
दिग बल	22.81	58.35	29.61	49.71	13.00	0.56	5.32
नतोन्नत बल	21.24	60.00	21.24	38.76	21.24	38.76	38.76
पक्ष बल	31.87	28.13	28.13	31.87	28.13	31.87	28.13
त्रिभाग बल	0.00	0.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00
वर्ष बल	0.00	0.00	0.00	15.00	0.00	0.00	0.00
मास बल	0.00	30.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
वार बल	45.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
होरा बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
अयन बल	24.08	30.37	31.65	50.97	15.72	29.28	4.05
युद्ध बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
काल बल	122.19	148.50	81.02	136.60	125.09	99.91	70.94
चेष्टा बल	24.08	24.6	59.12	36.11	41.72	9.02	28.13
नैसर्गिक बल	60	25.71	42.86	17.14	34.29	8.57	51.43
द्रिक बल	-4.54	-3.74	-0.20	-8.48	-27.90	-1.70	-4.93
कुल षडबल	406.20	432.67	382.31	426.89	278.51	307.23	392.71
रुप में षडबल	6.77	7.21	6.37	7.11	4.64	5.12	6.55
निम्न का अंश	1.04	1.03	1.16	1.42	0.71	1.02	1.09
स्थान बल अंश	1.1	1.09	1.28	2.04	0.56	1.99	1.82
दिग बल अंश	0.65	1.67	0.59	1.66	0.37	0.02	0.11
काल बल अंश	1.09	1.33	0.81	2.04	1.12	1.49	0.71
चेष्टा बल अंश	0.48	0.49	1.97	0.9	0.83	0.23	0.94
अयन बल अंश	0.8	1.01	0.79	2.55	0.52	1.46	0.1
स्थिति	3	1	5	2	7	6	4
ईष्ट फल	11.41	37.57	22.61	17.32	15.90	20.06	35.56
कष्ट फल	44.28	9.65	6.72	35.14	31.40	28.00	20.58

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशी	डिग्री	नक्षत्र	र.न.उ. स्वामी	दिशा	अवस्था
लग्न	कन्या	02:16:49	उत्तरा	बुध––रवि––गुरु		––
रवि	कन्या	23:51:35	चित्रा	बुध	मार्गी	––
बुध	कन्या	07:13:01	उत्तरा	बुध––रवि––केतु	मार्गी	तुंगस्थ
शुक्र	कन्या	01:08:31	उत्तरा	बुध––रवि––राहु	मार्गी	नीचस्थ
मंगल	कर्क	03:10:44	पुनर्वसु	चन्द्र––गुरु––राहु	मार्गी	नीचस्थ
गुरु	मकर	23:16:39	श्रवण	शनि––चन्द्र––रवि	वक्री	––
शनि	कन्या	03:56:56	उत्तरा	बुध––रवि––शनि	मार्गी	––
चन्द्र	मिथुन	18:15:46	अरिद्रा	बुध––राहु––चन्द्र	मार्गी	––
राहु	मकर	02:33:18	उत्तराषाढ़	शनि––रवि––गुरु	वक्री	––
केतु	कर्क	02:33:18	पुनर्वसु	चन्द्र––गुरु––राहु	वक्री	––
इन्द्र	कुम्भ	29:50:08	पूर्व भाद्रपद	शनि––गुरु––चन्द्र	वक्री	––
वरुण	मकर	29:57:46	धनिष्ठा	शनि––मंगल––शनि	वक्री	––
रुद्र	धनु	06:59:07	मूला	गुरु––केतु––राहु	मार्गी	––

पार्स फॉरच्युनाः वृषभ 26:40:60

कृष्णमूर्ति गृह कस्प

गृह	गृह कस्प		र.न.उ. स्वामी	भाव अवधि		
I.	कन्या	01:59:42	बु––सू––गु	151:59:42	–	180:45:47
II.	तुला	00:45:47	शु––मं––बु	180:45:47	–	211:12:56
III.	वृश्चिक	01:12:56	मं––गु––मं	211:12:56	–	242:00:48
IV.	धनु	02:00:48	गु––के––शु	242:00:48	–	272:41:18
V.	मकर	02:41:18	श––सू––गु	272:41:18	–	303:00:22
VI.	कुम्भ	03:00:22	श––मं––शु	303:00:22	–	331:59:42
VII.	मीन	01:59:42	गु––गु––र	331:59:42	–	0:45:
VIII.	मेष	00:45:47	मं––के––के	0:45:47	–	31:12:
IX.	वृषभ	01:12:56	शु––सू––र	31:12:	–	62:00:
X.	मिथुन	02:00:48	बु––मं––के	62:00:	–	92:41:
XI.	कर्क	02:41:18	चं––गु––र	92:41:	–	123:00:22
XII.	सिंह	03:00:22	सू––के––सू	123:00:22	–	151 59:42

भाव ग्रह कारक

भाव कारक ग्रह बल

गृह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	बुध	शनि	रवि	शुक्र राहु
II.	––	––	शुक्र	––
III.	––	––	मंगल	रवि
IV.	––	––	गुरु राहु	मंगल केतु
V.	––	––	गुरु शनि	मंगल केतु
VI.	––	––	शनि	––
VII.	––	––	गुरु	मंगल केतु
VIII.	––	––	मंगल	रवि
IX.	––	––	शुक्र	––
X.	––	––	बुध चन्द्र केतु	गुरु
XI.	––	––	मंगल चन्द्र	रवि गुरु
XII.	––	––	रवि शुक्र	बुध शनि राहु

भावों के कारक ग्रह

गृह	क.	ख.	ग.	घ.
I.	बुध	रवि बुध शनि	––	बुध शुक्र शनि राहु
II.	शुक्र	––	––	––
III.	मंगल	––	रवि	––
IV.	गुरु	राहु	मंगल केतु	––
V.	शनि	गुरु	––	मंगल केतु
VI.	शनि	––	––	––
VII.	गुरु	––	मंगल केतु	––
VIII.	मंगल	––	रवि	––
IX.	शुक्र	––	––	––
X.	बुध	चन्द्र केतु	––	गुरु
XI.	चन्द्र	मंगल	गुरु	रवि
XII.	रवि	शुक्र	बुध शुक्र शनि राहु	––

क्रमः क. कस्प राशी स्वामी, ख. भाव स्थित ग्रह, ग. कस्प स्वामी नक्षत्र में ग्रह, घ. भाव स्थित ग्रहों के नक्षत्र में ग्रह.

ग्रहों के कारक भाव

ग्रह	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
रवि	-	-	1 12	3 8 11
बुध	1	-	10	12
शुक्र	-	-	2 9 12	1
मंगल	-	-	3 8 11	4 5 7
गुरु	-	-	4 5 7	10 11
शनि	-	1	5 6	12
चन्द्र	-	-	10 11	-
राहु	-	-	4	1 12
केतु	-	-	10	4 5 7

कारक उप पति

गृह	उप पति	महाबली	बली	सामान्य	क्षीण
I.	गुरु	-	-	4 5 7	10 11
II.	बुध	1	-	10	12
III.	मंगल	-	-	3 8 11	4 5 7
IV.	शुक्र	-	-	2 9 12	1
V.	गुरु	-	-	4 5 7	1 12
VI.	शुक्र	-	-	2 9 12	1
VII.	राहु	-	-	4	10 11
VIII.	केतु	-	-	10	4 5 7
IX.	राहु	-	-	4	1 12
X.	केतु	-	-	10	4 5 7
XI.	राहु	-	-	4	1 12
XII.	रवि	-	-	1 12	3 8 11

कृष्णमूर्ति लग्न कुन्डली

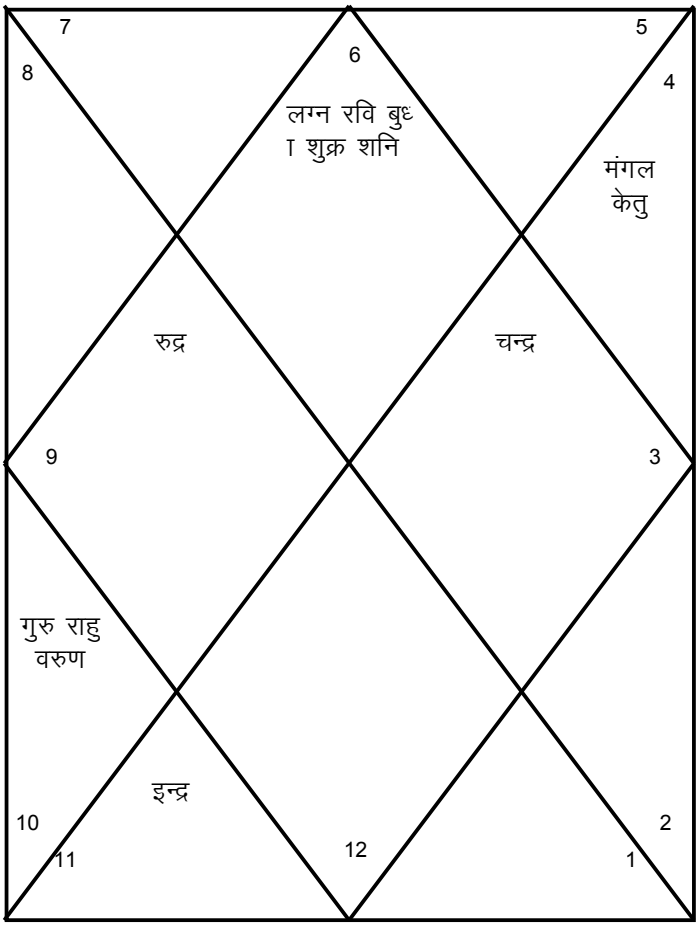

कृष्णमूर्ति भाव कुन्डली

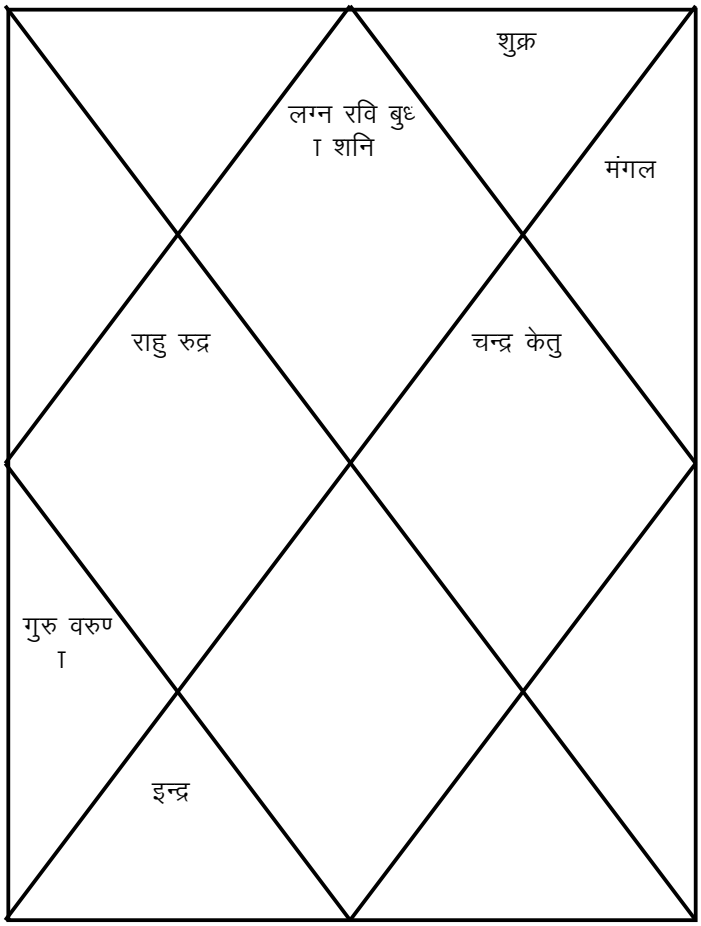

स्वामी ग्रह	
दिन स्वामी	रवि
लग्न राशी स्वामी	बुध
लग्न नक्षत्र स्वामी	रवि
लग्न सब स्वामी	गुरु
चन्द्र राशी स्वामी	बुध
चन्द्र नक्षत्र स्वामी	राहु
चन्द्र सब स्वामी	चन्द्र

पार्स फॉरच्युना	वृषभ 26:40:60
के. पी. अयनांश	23:53:50
जन्म समय विंशोत्तरी	राहुः 2 वर्ष
	4 माह 4 दिवस

जैमिनी लग्न एवं स्फुट

लग्न		राशी
जन्म लग्न	:	कन्या
द्रेष्काण लग्न (पारंपारिक)	:	कन्या
द्रेष्काण लग्न (परिवृत्ति त्रय)	:	कर्क
द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ)	:	कन्या
नवांश लग्न (पारंपरिक)	:	मकर
नवांश लग्न (कृष्ण मिश्र)	:	कन्या
अरुढ लग्न (पारंपरिक)	:	कन्या
अरुढ लग्न (सशर्त)	:	मिथुन
उपपद लग्न (पारंपरिक)	:	तुला
उपपद लग्न (सशर्त)	:	तुला
स्वांश लग्न	:	मकर
कारकांश लग्न	:	सिंह
पाक लग्न	:	कन्या
होरा लग्न (पारंपरिक)	:	सिंह
होरा लग्न (वृद्धिकारक)	:	कुम्भ
होरा लग्न (सव्यव)	:	मेष
भाव लग्न	:	कन्या
घटिका लग्न	:	वृषभ
सपद घटिका लग्न	:	धनु
अयुर लग्न	:	मीन
वर्णद लग्न	:	कुम्भ
श्री लग्न	:	कर्क
इन्दु लग्न	:	मिथुन
तारा लग्न	:	कर्क
नक्षत्र लग्न	:	कर्क
दिव्य लग्न	:	वृश्चिक
त्रिपवन लग्न	:	मेष
स्फुट योग लग्न	:	कर्क

जैमिनी लग्न कुन्डलियां

जन्म लग्न

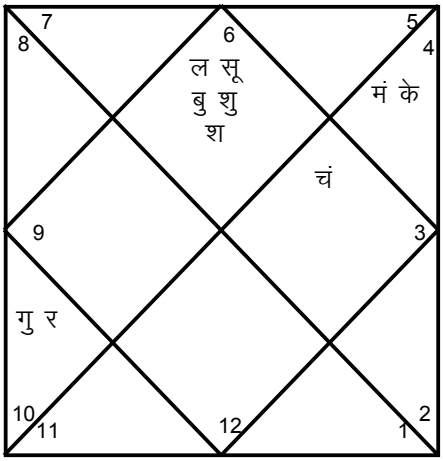

द्रेष्काण पारंपरिक

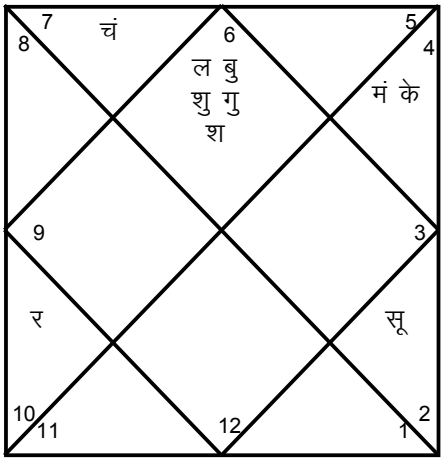

द्रेष्काण परिवृत्ति त्रय

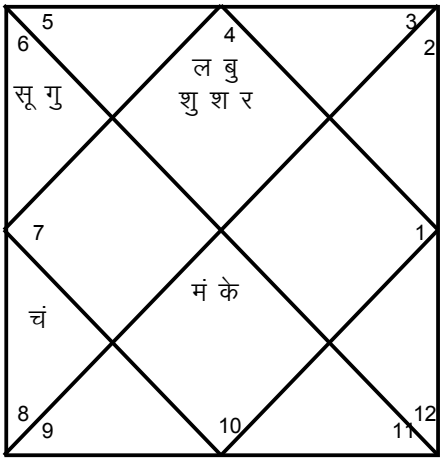

द्रेष्काण सोमनाथ

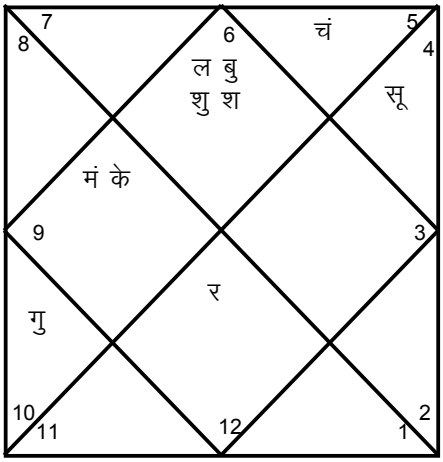

नवांश पारंपरिक

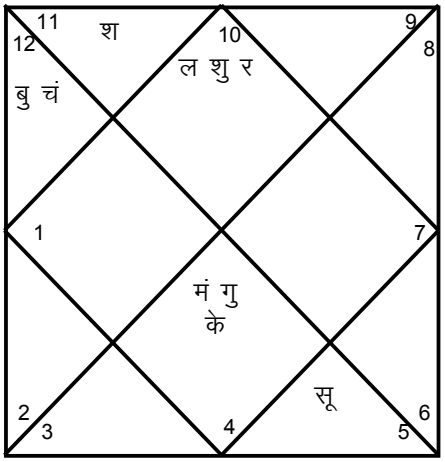

नवांश कृष्ण मिश्र

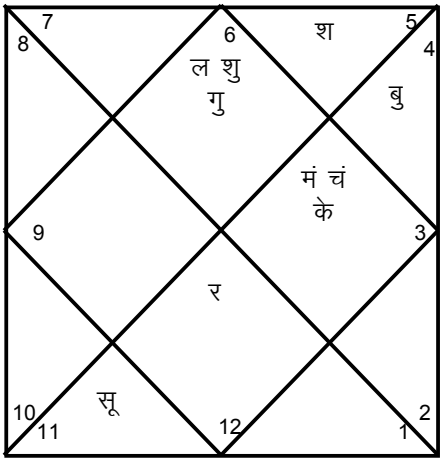

अरुढ लग्न (पारंपरिक)

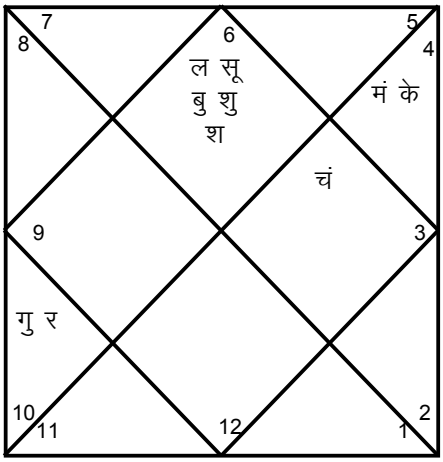

उपपद लग्न

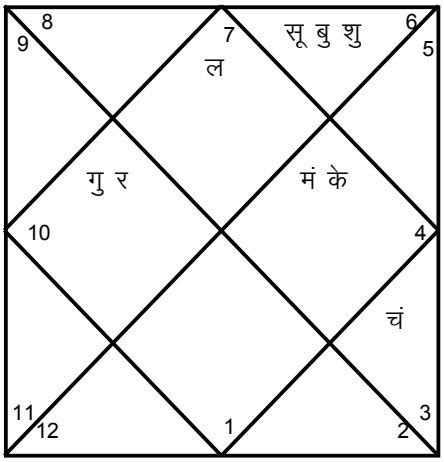

कारकांश लग्न

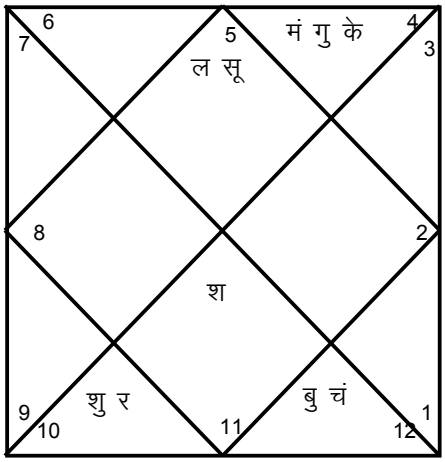

जैमिनी स्फुट

स्फुट नाम	स्फुट	
बीज स्फुट मुख्य	सिंह	05:45:46
बीज स्फुट उप––1	धनु	17:59:28
बीज स्फुट उप––2	वृश्चिक	17:44:15
क्षेत्र स्फुट मुख्य	मकर	29:38:31
क्षेत्र स्फुट उप––1	कर्क	14:25:52
क्षेत्र स्फुट उप––2	वृषभ	01:27:37

जैमिनी कारक

ग्रह	अष्ट चर	सप्त चर	सप्त स्थिर	सप्त भाव
रवि	अमात्य	आत्म	आत्म	
बुध	पितृ	मातृ	अमात्य	आत्म
शुक्र	दारा	दारा	दारा	अमात्य
मंगल	ज्ञाति	ज्ञाति	भ्रातृ	भ्रातृ
गुरु	भ्रातृ	अमात्य	अपात्य	मातृ दारा
शनि	अपात्य	अपात्य	ज्ञाति	अपात्य ज्ञाति
चन्द्र	मातृ	भ्रातृ	मातृ	
राहु	आत्म			

जैमिनी दृष्टि

ग्रह	सम्मुख दृष्टि	पार्श्व दृष्टि
मेष	वृश्चिक	सिंह––कुम्भ
वृषभ	तुला	कर्क––मकर
मिथुन –– चं	धनु	कन्या––मीन
कर्क –– मं –– के	कुम्भ	वृषभ––वृश्चिक
सिंह	मकर –– गुरु –– राहु	मेष––तुला
कन्या –– ल –– सू	मीन	मिथुन––धनु
तुला	वृषभ	सिंह––कुम्भ
वृश्चिक	मेष	कर्क––मकर
धनु	मिथुन –– चन्द्र	कन्या––मीन
मकर –– गु –– र	सिंह	वृषभ––वृश्चिक
कुम्भ	कर्क –– मंगल –– केतु	मेष––तुला
मीन	कन्या –– लग्न –– रवि –– बुध	मिथुन––धनु

विंशोत्तरी दशा (महादशा)

राहु	18 वर्ष
से	01-04-1994
तक	01-04-2012
राहु	01-04-1994
गुरु	13-12-1996
शनि	08-05-1999
बुध	14-03-2002
केतु	01-10-2004
शुक्र	20-10-2005
रवि	20-10-2008
चन्द्र	13-09-2009
मंगल	15-03-2011

गुरु	16 वर्ष
से	01-04-2012
तक	01-04-2028
गुरु	01-04-2012
शनि	20-05-2014
बुध	01-12-2016
केतु	08-03-2019
शुक्र	12-02-2020
रवि	13-10-2022
चन्द्र	02-08-2023
मंगल	01-12-2024
राहु	07-11-2025

शनि	19 वर्ष
से	01-04-2028
तक	01-04-2047
शनि	01-04-2028
बुध	04-04-2031
केतु	13-12-2033
शुक्र	21-01-2035
रवि	23-03-2038
चन्द्र	05-03-2039
मंगल	04-10-2040
राहु	13-11-2041
गुरु	18-09-2044

बुध	17 वर्ष
से	01-04-2047
तक	01-04-2064
बुध	01-04-2047
केतु	28-08-2049
शुक्र	25-08-2050
रवि	26-06-2053
चन्द्र	02-05-2054
मंगल	02-10-2055
राहु	28-09-2056
गुरु	17-04-2059
शनि	23-07-2061

केतु	7 वर्ष
से	01-04-2064
तक	01-04-2071
केतु	01-04-2064
शुक्र	28-08-2064
रवि	28-10-2065
चन्द्र	05-03-2066
मंगल	04-10-2066
राहु	02-03-2067
गुरु	20-03-2068
शनि	24-02-2069
बुध	05-04-2070

शुक्र	20 वर्ष
से	01-04-2071
तक	01-04-2091
शुक्र	01-04-2071
रवि	01-08-2074
चन्द्र	01-08-2075
मंगल	01-04-2077
राहु	01-06-2078
गुरु	01-06-2081
शनि	31-01-2084
बुध	02-04-2087
केतु	31-01-2090

रवि	6 वर्ष
से	01-04-2091
तक	01-04-2097
रवि	01-04-2091
चन्द्र	20-07-2091
मंगल	18-01-2092
राहु	25-05-2092
गुरु	19-04-2093
शनि	05-02-2094
बुध	18-01-2095
केतु	25-11-2095
शुक्र	31-03-2096

चन्द्र	10 वर्ष
से	01-04-2097
तक	01-04-2107
चन्द्र	01-04-2097
मंगल	30-01-2098
राहु	01-09-2098
गुरु	02-03-2100
शनि	02-07-2101
बुध	31-01-2103
केतु	01-07-2104
शुक्र	30-01-2105
रवि	01-10-2106

मंगल	7 वर्ष
से	01-04-2107
तक	01-04-2114
मंगल	01-04-2107
राहु	28-08-2107
गुरु	16-09-2108
शनि	22-08-2109
बुध	01-10-2110
केतु	28-09-2111
शुक्र	24-02-2112
रवि	26-04-2113
चन्द्र	01-09-2113

विंशोत्तरी प्रत्यन्तर

गुरु	
से	01-04-2012
तक	20-05-2014
गुरु	01-04-2012
शनि	14-07-2012
बुध	14-11-2012
केतु	05-03-2013
शुक्र	19-04-2013
रवि	27-08-2013
चन्द्र	05-10-2013
मंगल	09-12-2013
राहु	23-01-2014

शनि	
से	20-05-2014
तक	01-12-2016
शनि	20-05-2014
बुध	13-10-2014
केतु	21-02-2015
शुक्र	16-04-2015
रवि	18-09-2015
चन्द्र	03-11-2015
मंगल	19-01-2016
राहु	13-03-2016
गुरु	30-07-2016

बुध	
से	01-12-2016
तक	08-03-2019
बुध	01-12-2016
केतु	28-03-2017
शुक्र	15-05-2017
रवि	30-09-2017
चन्द्र	11-11-2017
मंगल	19-01-2018
राहु	08-03-2018
गुरु	10-07-2018
शनि	28-10-2018

केतु	
से	08-03-2019
तक	12-02-2020
केतु	08-03-2019
शुक्र	28-03-2019
रवि	24-05-2019
चन्द्र	10-06-2019
मंगल	08-07-2019
राहु	28-07-2019
गुरु	17-09-2019
शनि	02-11-2019
बुध	26-12-2019

शुक्र	
से	12-02-2020
तक	13-10-2022
शुक्र	12-02-2020
रवि	23-07-2020
चन्द्र	10-09-2020
मंगल	30-11-2020
राहु	26-01-2021
गुरु	21-06-2021
शनि	29-10-2021
बुध	01-04-2022
केतु	17-08-2022

रवि	
से	13-10-2022
तक	02-08-2023
रवि	13-10-2022
चन्द्र	28-10-2022
मंगल	21-11-2022
राहु	08-12-2022
गुरु	21-01-2023
शनि	01-03-2023
बुध	16-04-2023
केतु	28-05-2023
शुक्र	14-06-2023

चन्द्र	
से	02-08-2023
तक	01-12-2024
चन्द्र	02-08-2023
मंगल	11-09-2023
राहु	10-10-2023
गुरु	22-12-2023
शनि	25-02-2024
बुध	12-05-2024
केतु	20-07-2024
शुक्र	17-08-2024
रवि	06-11-2024

मंगल	
से	01-12-2024
तक	07-11-2025
मंगल	01-12-2024
राहु	21-12-2024
गुरु	10-02-2025
शनि	28-03-2025
बुध	21-05-2025
केतु	08-07-2025
शुक्र	28-07-2025
रवि	23-09-2025
चन्द्र	10-10-2025

राहु	
से	07-11-2025
तक	01-04-2028
राहु	07-11-2025
गुरु	19-03-2026
शनि	14-07-2026
बुध	29-11-2026
केतु	03-04-2027
शुक्र	24-05-2027
रवि	17-10-2027
चन्द्र	30-11-2027
मंगल	11-02-2028

त्रिभागी दशा

राहु	
से	11-10-2009
तक	06-06-2011
राहु	24-03-2001
गुरु	29-10-2002
शनि	22-09-2004
बुध	05-06-2006
केतु	16-02-2007
शुक्र	16-02-2009
रवि	23-09-2009
चन्द्र	23-09-2010
मंगल	06-06-2011

गुरु	
से	06-06-2011
तक	04-02-2022
गुरु	07-11-2012
शनि	17-07-2014
बुध	20-01-2016
केतु	03-09-2016
शुक्र	14-06-2018
रवि	26-12-2018
चन्द्र	16-11-2019
मंगल	30-06-2020
राहु	04-02-2022

शनि	
से	04-02-2022
तक	05-10-2034
शनि	06-02-2024
बुध	22-11-2025
केतु	19-08-2026
शुक्र	28-09-2028
रवि	17-05-2029
चन्द्र	07-06-2030
मंगल	04-03-2031
राहु	26-01-2033
गुरु	05-10-2034

बुध	
से	05-10-2034
तक	03-02-2046
बुध	14-05-2036
केतु	10-01-2037
शुक्र	01-12-2038
रवि	26-06-2039
चन्द्र	05-06-2040
मंगल	01-02-2041
राहु	15-10-2042
गुरु	19-04-2044
शनि	03-02-2046

केतु	
से	03-02-2046
तक	04-10-2050
केतु	14-05-2046
शुक्र	22-02-2047
रवि	18-05-2047
चन्द्र	07-10-2047
मंगल	14-01-2048
राहु	26-09-2048
गुरु	11-05-2049
शनि	05-02-2050
बुध	04-10-2050

शुक्र	
से	04-10-2050
तक	03-02-2064
शुक्र	23-12-2052
रवि	24-08-2053
चन्द्र	04-10-2054
मंगल	15-07-2055
राहु	15-07-2057
गुरु	25-04-2059
शनि	04-06-2061
बुध	25-04-2063
केतु	03-02-2064

रवि	
से	03-02-2064
तक	03-02-2068
रवि	16-04-2064
चन्द्र	16-08-2064
मंगल	09-11-2064
राहु	16-06-2065
गुरु	28-12-2065
शनि	16-08-2066
बुध	11-03-2067
केतु	04-06-2067
शुक्र	03-02-2068

चन्द्र	
से	03-02-2068
तक	04-10-2074
चन्द्र	23-08-2068
मंगल	12-01-2069
राहु	12-01-2070
गुरु	03-12-2070
शनि	24-12-2071
बुध	03-12-2072
केतु	24-04-2073
शुक्र	04-06-2074
रवि	04-10-2074

मंगल	
से	04-10-2074
तक	04-06-2079
मंगल	12-01-2075
राहु	25-09-2075
गुरु	09-05-2076
शनि	03-02-2077
बुध	02-10-2077
केतु	09-01-2078
शुक्र	20-10-2078
रवि	13-01-2079
चन्द्र	04-06-2079

योगिनी दशा

दशा	पति	उम्र	तक
मंगला	चन्द्र	1 साल	30-11-2009
पिंगला	रवि	2 साल	30-11-2011
धान्य	गुरु	3 साल	30-11-2014
भ्रामारी	मंगल	4 साल	30-11-2018
भद्रिका	बुध	5 साल	30-11-2023
उल्का	शनि	6 साल	30-11-2029
सिद्धा	शुक्र	7 साल	30-11-2036
संकटा	राहु	8 साल	30-11-2044
मंगला	चन्द्र	1 साल	30-11-2045
पिंगला	रवि	2 साल	30-11-2047
धान्य	गुरु	3 साल	30-11-2050
भ्रामारी	मंगल	4 साल	30-11-2054
भद्रिका	बुध	5 साल	30-11-2059
उल्का	शनि	6 साल	30-11-2065
सिद्धा	शुक्र	7 साल	30-11-2072
संकटा	राहु	8 साल	30-11-2080

शटत्रिंश दशा

पति	उम्र	तक
मंगल	4 साल	30-04-2010
बुध	5 साल	30-04-2015
शनि	6 साल	30-04-2021
शुक्र	7 साल	30-04-2028
राहु	8 साल	30-04-2036
चन्द्र	1 साल	30-04-2037
रवि	2 साल	30-04-2039
गुरु	3 साल	30-04-2042
मंगल	4 साल	30-04-2046
बुध	5 साल	30-04-2051
शनि	6 साल	30-04-2057
शुक्र	7 साल	30-04-2064
राहु	8 साल	30-04-2072
चन्द्र	1 साल	30-04-2073
रवि	2 साल	30-04-2075
गुरु	3 साल	30-04-2078

दशा स्वामी ग्रहों की स्थितियां, ग्रह दशा उम्र व दशा चक्र की उम्र योगिनी और शट त्रिम्श दशा में समान होती है। दोनों दशाओं में सिर्फ दशा की शुरुआत अलग ग्रहों से होती है, बाकी सभी बातें समान हैं।

पाराशर की ुउपदेश है की अगर जातक का जन्म दिन सूर्य होरा में हो या रात में चन्द्र होरा में हो तो शट त्रिंश दशा का उपयोग करना चाहिये

इसी युक्ति से अगर जन्म दिन में चन्द्र होरा या रात में सूर्य होरा में हो तो योगिनी दशा का इस्तेमाल करना चाहिये

ग्रह योग फल

सर्वांग योग
अष्टकवर्ग का ये अत्यंत लाभदायक योग है। आप जीवन में बहुत प्रगति करेगे। आपको सफलता और सम्मान दोनो मिलेंगे। आपकी महत्वाकांक्षाऐं पूर्ण होगी और मन की इच्छाओं को नया बल मिलेगा।

कोटिश्वर योग
अष्टकवर्ग का ये अत्यंत शुभ योग है। अपने नाम के अनुसार ये योग आपको अत्यंत धनवान बनायेगा। जीवन मे आपको बहुत सफलता मिलेगी और धन इकठा करेंगे।

अमल योग
यह भाग्यदायक योग है। यह योग आपको चारित्र सम्पन्न व्यक्ति बनाता है और बहुत वांछित गुण देता है। आप सत्यनिष्ठ बनेंगे ओर दुसरों की मदद करने की इच्छा रखेगे। आप धनी, समृद्ध बनेंगे ओर स्थायि प्रतिष्ठा पाएंगे। आप दूसरो के लिये प्रेरणा श्रोत बनेगे और आनंददायक जीवन जीयेंगे।

भद्र योग
यह अनुकूल योग है। आपका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है और आपका स्वभाव मृदुल है। आप विद्वान व्यक्ति बनेंगे ओर समाज में बहुत आदर मिलेगा। यह भाग्यदायक योग आपको प्रभावशाली व्यकितत्व और वांछीत गुण देता है। आप प्रमाणिक, सत्यनिष्ठ और शुध्ध हृदय के व्यकित बनेगे। आप धनी, दयालू, उदार और दूसरे की मदद करने वाले बनेगे। आप एक आदरणीय और प्रभावशाली व्यकित बनेगे।

शकट योग
यह भाग्यदायक योग नही है। आप का भाग्य अस्थिर और उपर–नीचे होता रहेगा। कभी कभी आपको अत्यंत कठिन स्थितिओं से गुज़रना पडेगा। आप थोड़े विवादी और अड़ियल स्वभाव के व्यक्ति हो उसे आपकी लोकप्रियता कम होगी।

बुधादित्य योग
यह अच्छा योग है। यह योग आपको बुद्धिमान बनाता है और आपको अच्छी शिक्षा और कलात्मक हुन्नर दिलाने में मदद करेगा। आपकी विद्याग्रहण शक्ति प्रभावशाली होगी, व ज्ञान ग्रहण करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

विद्या योग
यह योग आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम प्रगति देगा। आपकी बुद्धि तेज है, और प्रखर स्मरणशक्ति आपको जीवन में काफी आगे ले जायेगी। आप समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखते हैं और किसी भी कार्य को उत्तम तरीके से करने की तरकीबें ढूंढ़ निकालते हैं।

इष्टबल योग
यह एक शुभ योग है। यह योग आप पर समृद्धि की वर्षा करेगा व आप को शक्तिशाली पद दिलायेगा। सामाजिक रूप से आप बहुत लोकप्रिय व प्रभवशाली बनेंगे। आप को अपने परिवार व

जानने वालों का आदर एवं सम्मान मिलेगा।

अरिष्ट योग

यह योग आपके अनुकूल नहीं है। आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा व जीवन में काफी हाथ पैर फेंकने होंगे। आप बहुत संघर्षों व विरोधों में से गुज़रेंगे जो आपको मज़बूत बनायेगा। आपकी आर्थिक स्थिती थोड़ी डांवाडोल होगी। दूसरी तरफ अपनी इच्छा शक्ति व संघर्ष की प्रवृत्ति के कारण आप जीवन में प्रगति भी करेंगे।

गुरुचन्डाल योग

यह योग अनुकूल नहीं है। जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण दार्शनिक होगा, व आप नास्तिक भी हो सकते हैं। हो सकता है आपके परिवार में आपको सहानुभूति न मिले व अपने जीवनसाथी के लिये आप एक न समझ में आने वाली पहेली बन जायें। आपके सम्बन्ध निम्न कोटि के व्यक्तियों से हो सकते हैं जिनसे आपको आदर प्राप्त होगा।

सिंहासन योग

यह एक अत्यंत सौभाग्यशाली योग है। यह एक प्रकार का राज योग है जो आपको शक्ति और प्रमुखता देगा। आप व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा स्थान प्राप्त करेंगे व सामाज में एक प्रभावशाली व्यक्ति बनेगे। आपके जीवन के मध्य हिस्से के दौरान आप बहुत सफलता प्राप्त करेंगे।

पहले दर्जे का राज योग

यह एक सौभाग्यशाली राज योग है। आप जीवन में उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आपकी कुन्डली के ग्रह अगर प्रबल हों तो आप मंत्री बनेंगे। आप उतने उपर अगर न भी जाये तो भी इतना तो निश्चित है की आप कोई सरकारी प्रतिष्ठान में प्रमुख पद जरूर प्राप्त करेंगे।

अन्त वयसी धन योग

आपके जीवन के मध्य हिस्से के बाद आपको विविध स्त्रोतों से धन मिलेगा। इस दौरान आपकी प्रसिद्धी भी बढ़ेगी व आपको सम्मान प्राप्त होगा।

उत्तम गृह योग

यह शुभ योग है। आप सुंदर घरों के स्वामी बनेंगे व सुविधायुकत जीवन जीयेगे। हो सकता है कि आप अपने घर के द्वारा धनार्जन भी करें।

बन्धु पूज्य योग

यह एक अच्छा योग है। आपकी उपलब्धियाँ बहुत उच्च होंगी जिन की वजह से आपके मित्र तथा सम्बन्धी आपके साथ आदर युक्त व्यवहार करेंगे।

शंख योग

यह एक शुभ योग है यह योग आपको सभी प्रकार के आनंद के साथ एक लंबा और समृद्ध जीवन देगा। आपका परिवारिक जीवन सुखी एवं समृद्धिपूर्ण होगा। अपने परिवार के सभी सदस्यों द्वारा आपको प्रेम की प्राप्ति होगी। आप विद्वान बनेंगे, मानवतावादी .ष्टिकोण अपनायेगे व सत्यनिष्ठ बनेंगे। आपके सदकार्यो के लिये आपको स्थायी प्रसिद्धी मिलेगी।

रोगग्रस्थ योग

यह एक प्रतिकूल योग है। आपका शारीरिक संरचना कमजोर है जिसके कारण आप जल्द बीमार पड़ते हैं। अगर आपके लग्न, चंद्र व सूर्य पर कोई दुष्प्रभाव न हो तो इस योग के असर मे कुछ कमी आयेगी।

ग्रहदृष्टि के फल

रवि ट्राइन गुरु
आप आशावादी है तथा आत्म विश्वास से भरपूर है। आप आर्थिक रुप से समृद्ध है तथा आपको मित्रों से लाभ मिलता है। आप का झुकाव आध्यात्म की ओर है परन्तु आप आलसी भी हैं। आपके निवेश व सट्टे से आपकी आर्थिक स्थिति को और मजबूत करने के अवसर मिलते हैं।

बुध संयोग शनि
इन दोनों ग्रहों की युति व्यक्ति को निराशावादी और स्थिर बनाती हैं। दोनों ही स्थितियों से बचना चाहिए। आपका जीवन के प्रति दृष्टिकोण (पुरातन पंथी) पुराने ढ़ग का है। आपके कार्य क्षेत्र में आप विषय के निचोड़ के बजाय उसकी सूक्ष्मताओं पर अधिक ध्यान देते है।

बुध स्क्वायर रुद्र
आपके व्यक्तित्व मे कुछ छुपी हुई विशेषताएँ हैं जो समय–समय पर उजागर होती रहती हैं। आपका झुकाव तंत्र–मंत्र की ओर भी रहता है।

शुक्र सेक्सटाइल मंगल
शुक्र–मंगल त्रिकोण आपको जोखिम भरे कार्य करने की प्रवृति देता है। आपकी रचनात्मक सोच भी काफी सशक्त है तथा आप रचनात्मक कार्यों मे काफी सफल हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति भी काफी अच्छी है। आपके दोस्तों के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे तथा विपरित योनि के प्रति भी आपका विशेष झुकाव रहेगा।

शुक्र संयोग शनि
शुक्र और शनि का गठजोड व्यक्ति को ऐसे गुण देता है जो कि अपनी
कर्तव्यपूर्ति के लिए अपनी खुशियों का त्याग कर देता है। आप सौम्य स्वभाव के हैं तथा अपनी भावनाओं का खुल कर प्रदर्शन नहीं कर पाते। आपका गम्भीर और व्यवहारिक स्वभाव, जीवन के सभी हिस्सों पर अपना प्रभाव दर्शाता है, यहाँ तक कि प्रेम पर भी।

शुक्र ट्राइन राहु
आपका जीवन खुशी व उतेजना से भरपूर रहेगा। आपका मैत्रीपूर्ण स्वभाव व गर्मजोशी अपको सबका प्रिय बनाती है। आप अपने प्रेमी के साथ काफी वक्त साथ गुजारेंगे। आप को व्यापारी वर्ग से लाभ रहेगा।

शुक्र विपरीत इन्द्र
शुक्र यूरेनस की इस स्थिति के कारण आपकी जिन्दगी भाग्य चक्र की तरह हो जाती है। आपके जीवन में विशेषकर व्यक्तिगत जीवन में काफी उतेजना व रोमांच रहता है। आप में अपनी एक विशेष पहचान बनाने की जन्मजात इच्छा है। जीवन में आपके अनुभव आपको काफी उतेजना देते है।

मंगल सेक्सटाइल शनि
मंगल व शनि की त्रिकोणीय युति आपको अपने जीवन व काम के प्रति सचेत रखती है। आप सफलता

प्राप्त करने के लिए योजना बनाते समय हर पहलू को ध्यान मे रखते हैं। आपको अपने पूर्वजों की सम्पति प्राप्त हो सकती है।

मंगल विपरीत राहु

यह ग्रह स्थिति आपकी शारीरिक ऊर्जा बढ़ाती है। हालाँकि कभी–कभी आप इस ऊर्जा का दुरुपयोग करना चाहते हैं। आप शारीरिक प्रेम की ओर जल्दी आकर्षित होते है।

गुरु सेमी स्क्वायर रुद्र

आप बहुत अधिक महत्वाकाँक्षी है। आप महान आदर्शों का अनुकरण करते हैं। आपका वास्ता उच्चाधिकारियों से पडेगा इसलिए आपको नीतिवान होना जरुरी है। आपको एक योजना पर अंधविश्वास करके नहीं चलना चाहिए जबकि आपके सामने दूसरे विकल्प हों।

शनि ट्राइन राहु

आप सही मायनों में उद्यमी हैं तथा थोडी सी अतिरिक्त मेहनत आपको अच्छी सफलता दिला सकती है। आप के जीवन मे कुछ आदर्श हैं आप उनका पालन करेंगे। कभी–कभी आप भावुक हो जाते है परन्तु आपकी आध्यात्मिक उन्नति होगी।

शनि स्क्वायर रुद्र

इस दृष्टि सम्बन्ध के कारण आपके जीवन में धन की कमी रहेगी। अतः खर्चों पर नियन्त्रण रखें। आपको अपनी महत्वकाँक्षाए पूरी करना असम्भव लगेगा। अतः आपको अपनी सोच व इच्छाओं को यथार्थ के तराजू में तौलना चाहिए।

केतु ट्राइन इन्द्र

आपमें असीमित ऊर्जा है तथा आप अपनी क्षमताओं से परिचित हैं। आप अपनी क्षमताओं से परिचित हैं। आप मानवीय तथा सामाजिक कार्यों में रुचि लेंगे। अपने आकर्षक व्यक्तित्व तथा विलक्षण विचारों के कारण आप सदा रोशनी मे रहेंगे तथा काफी उन्नति करेंगे।

इन्द्र सेमी सेक्सटाइल वरुण

आपकी दर्शन व आध्यात्म में गहरी रुचि रहेगी। आप कलात्मक कार्य भी करना चाहेंगे।

भविष्यवाणी

खास खूबियां

आप में तीव्र बुद्धि, मानवतावादी स्वभाव और उदार मनोवृति है। आप स्वाभिमानी हैं आत्मविश्वास से छलकते रहतें हैं। आप जीवन में सिर्फ अपने कठोर परिश्रम से ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आप में भाषण देने की क्षमता और कानून से संबंधित विषयों में रुचि होगी। आप एक श्रेष्ठ वकील सिद्ध हो सकते हैं। साहित्य और पत्रकारीता में आपकी विशेष रुचि हो सकती है। आप स्वभाव से थोड़े विवाद प्रिय हैं जिसके कारण आप विवादों में आसानी से पड़ेंगे। आपको विचारों के आदान–प्रदान व यात्रा का शौक है।

हो सकता है कि जीवन के शुरुआती वर्षों में आपकी रुचि गलत चीज़ों में रहे जिनमे आपकी तीव्र बुद्धी व समय की बर्बादी होगी। अपने कुछ अविवेकी कार्यों के कारण लोग आपको झगड़ालू समझ बैठेंगे। आपको शक्तिशाली लोगों से सहायता प्राप्त होगी।

अपनी तीव्र बुद्धी के कारण आपको सहज ही प्रसिद्धी प्राप्त होगी। आपको साहित्य और विज्ञान के अभ्यास में सफलता मिलेगी। आप मानव स्वभाव का एकाग्रता से निरिक्षण करेंगे व इसी कारण साहित्य में आसानी से सफल होंगे। चंचल होने के बावजूद भी आप रोज की छोटी छोटी बातो पर पूरा ध्यान देंगे। आपको कला के क्षेत्र में भी सफलता मिल सकती है।

मानसिक खूबियां

आप सुशिक्षित व्यक्ति हैं। आपमें बहुमुखी प्रतिभा और हस्तकला की काबिलियत है। आप कुशाग्रबुद्धि, कलात्मक, जिज्ञासु तथा आविष्कारशील होंगे। आप लेखन कला में निपुण होंगे तथा अनेक भाषाओं पर प्रभुत्व रखेंगे। आप प्रभावशाली और मानवीय विचारों वाले होंगे।

शारीरिक सरंचना

आपकी जन्म कुन्डली के अनुसार आप लंबे, पतले व सुंदर व्यक्ति हैं। आपकी उंगलियां पतली, नाक सीधी, माथा बड़ा और सुंदर आंखे हैं। आप हमेशा काम में व्यस्त रहेंगे और चंचल स्वभाव वाले होंगे। बातचीत आपका प्रिय शगल है। आप काफी यात्रायें करेंगे।

स्वास्थ

आपकी सूर्य राशी कमर, किडनी, और रक्त संचार तंत्र पर प्रभाव रखती है, इसलिये आपके शरीर के इन हिस्सों के रोग ग्रसिन होने की संभावनायें ज्यादा हैं। आपको पीठ दर्द, किडनी के रोग व त्वचा रोग जैसे दाद आदी हो सकते हैं।

आपको वाद–विवाद और तनाव को टालना चाहिए और दिमाग को शांत रखना चाहिए। आपको नियमित रुप से कसरत करनी चाहिए। संगीत और ध्यान आपके लिये चमतकारी काम कर सकते हैं। आपको सेब, स्ट्रोबेरी, आलूबुखारा, आलू और पुदीना खाना चाहिए।
आपकी कुन्डली मे लग्न भाव शुक्र से दूषित है। आपको कमज़ोरी की शिकायत हो सकती है।

आपकी कुन्डली का लग्न भाव शनि द्वारा दूषित है। आपको सर्दी और कमज़ोरी हो सकती है।

आपकी कुन्डली का लग्न भाव युरेनस से दूषित है। आपको हृदय सम्बन्धित रोग हो सकते हैं।

आपकी कुन्डली में चंद्र किसी भी प्रकार दूषित नही है इसलिये आपको पर्यावण के कारण होने वाले रोग होने की संभावना बहुत कम है।आपकी कुन्डली में सूर्य दूषित नहीं है आप विरासत में मिलने वाली बीमारियों से बचे रहेंगे। अगर संयोग से आपको कोई बीमारी है तो वह थोड़े समय के लिये ही होगी।

शिक्षा एवं जीविका

थ्अवनतंइसम चसंदमजंतल बवउइपदंजपवदे पद लवनत बींतज उांमे लवन इसमेमकण ल्वन ूपसस ींअम ंींतच उपदक ंदक ामम्द पदजमससमबजण ल्वन ूपसस ींअम ेनबबमे पद ंदल मकनबंजपवदंस पिमसक व िलवनत बीवपबमण

ल्वन ूपसस ींअम मगबमससमदज मकनबंजपवद ूपजी ेवउम कपेजपदबज ेचमबपंसप्रंजपवद पद ं पिमसकण ल्वन ूपसस ंसेव ींअम पदवितउंस ेजनकपमे बवअमतपदह ं अमतल ूपकम तंदहम व ि पदजमतमेजपदह ेनइरमबजेण च्मवचसम ूपसस जतमंज लवन ूपजी तमेचमबज वित लवनत ूपेकवउ ंदक बवदेपकमत लवन जव इम ंेजवतमीवनेम व ि दवूसमकहमण ल्वन ूपसस कव ूमसस पद तमेमंतबीं.जनकपमे ंदक उंल ेमबनतम ं कवबजवतंजम कमहतममण ल्वनत ीपही मकनबंजपवद ूपसस समंक लवन जव ेनबबमे पद जीम पिमसक व िचतवमिपवद ंसेवण

आपकी कुन्डली में विध्यमान कुछ ग्रहयोग शुभ "विद्या योग" बनाते हैं। यह योग आपको उच्च शिक्षा और शैक्षणिक क्षेत्र में सफलता देता है। कुछ गंभीर विषयो का आप ज़िन्दगी भर अभ्यास करेंगे। आपको लोग आदर देंगे।

आपकी कुन्डली में ग्रह "बुध आदित्य योग" बनाते हैं। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। आपके पसंद का क्षेत्र ऐकाउन्टस, शिक्षक, कृषि विज्ञान इत्यादि होंगे।

आपकी कुन्डली में विध्यमान ग्रहयोग आपको विज्ञान में रुचि रखने को प्रेरित करेंगे। आप व्यवसायिक कोर्स कर विशिष्ट हुनर प्राप्त करेंगे। कम्प्युटर के क्षेत्र में आपको बहुत रुचि होगी।

आपकी कुन्डली में विध्यमान ग्रहयोग आपको जन्मजात व्यापारी के गुण प्रदान करते हैं। आप व्यापार की बारीकीयॉ जल्दी सीख जायेंगे। आप व्यापार और उत्पादन के क्षेत्र से काफी कमाई करेंगे। आपको व्यापार में आने वाली मंदी का सामना करना पडेगा और तब आपको अपने पर नियंत्रण रखना चाहिए। लेकिन ज्यादातर आपका व्यापार अच्छा चलेगा।

संपत्ति व उत्तराधिकार

परिवार–संपत्ति की दृष्टि से आपके पास हर प्रकार की चमक दमक होगी। आप शुभ आशिर्वाद प्रदान व्यक्ति हैं। हीरे के जवाहरात, गहने, आदी आपको बिन मांगे मिलेंगे। आपकी वृत्ति प्रतिभाशाली लोगों के साथ रहेने की है। आप जीवन का आनंद लेंगे व उत्सवमय जीवन व्यतीत करेंगे। आपका पारिवारिक माहोल आनंदमय, उजला और सुखी होगा।

आपकी कुन्डली में लाभभाव का स्वामी अनुकूल दसवें भाव में है। अपनी दृढ प्रतिज्ञा और इच्छाशक्ति के लिये आप प्रसिद्ध होंगे। आपको अपनी क्षमता और सीमाएं जान कर काम करना वाहिए वरना

आपका पतन हो सकता है। आपको उच्च पद मिलेगा और जीवन में बहुत प्रगति करेंगे।

आपकी कुन्डली में विरासत का स्वामी ग्यारहवें भाव में है जो अनुकूल स्थिति नहीं है। आपके मित्रों के साथ आपके सम्बन्ध खराब होंगे। आपका जीवनसाथी भी आपके लिये समस्या खड़ी कर सकता है। आपकी माता का स्वास्थ ठीक नहीं रहेगा व वह थोडी विचलित रहेंगी।

विवाह एवं वैवाहिक जीवन

आपकी कुन्डली बताती है की आपकी शादी सामान्य उम्र पर होगी। आपकी कुन्डली में लग्न भाव और सप्तम भाव का स्वामी सेस्कवीकवाड्रेट दृष्टि सम्बन्ध में है। आपका सम्बन्ध परस्पर प्रेम और आदर पर आधारित है। आपके बीच कभी–कभी छोटे मतभेद होंगे। आप जैसे जैसे साथ रहकर प्रगति करेंगे वैसे एकदूसरे को अच्छी तरह से समझेंगे और यह पूरे परिवार के लिये लाभदायक रहेगा।

यात्रा एवं भ्रमण

आपकी कुन्डली में अधिकतर ग्रह चर और द्विस्वभाव राशिओं में हैं। आप जन्म से ही घूमने के शौकीन होंगे व बहुत सारी जगह घूमेंगे। यात्रा आपके जीवन पर बहुत प्रभाव रखेगी और इससे आपके जीवन में बहुत बदलाव आयेगा। आपको व्यवसाय के लिये बहुत यात्रा करनी पड़ेगी। आपकी कुन्डली में ज्यादातर ग्रह त्रिकोण भाव और चर राशियों में है। आपको अपने व्यवसाय के कारण काफी यात्रा करनी पड़ेगी। आप अपने शौक व आनन्द के लिये भी यात्रायें करेंगे।

शुभ रत्न

सारे शुभ रत्नों में पन्ना आपके लिये अनुकूल है।

आप ५ रत्ती का पन्ना सोने की अगूठी में दायें हाथ की अनामिका उंगलि में बुधवार को पहननी चाहिए।

पन्ना का सस्ता उपरत्न पेरीडोट है। इस रत्न को आपको चांदी की अंगूठी में पहनना चाहिये। इस रत्न को पहनते समय इस मंत्र का जाप करें।

"प्रियंगुकलिका श्याम रुपेणाप्रतिमं बुधं
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तम बुधं प्रणमाम्यहम।"

रत्नों का ऊपर दिया गया वज़न १८ साल से ऊपर के पुरुषों के लिये है। स्त्रीयों के लिये यह वज़न ३/४ से १/२ तक और छोटे बच्चो के लिये १/२ से १/४ भाग का रहेगा।

ग्रहों की स्थिती का फल

लग्न फल

आपकी लग्न राशी कन्या है. इस लग्नराशी का स्वामी मरक्यूरी यानि बुध है, जो की आपके लिए शुभ फलदायक है.

कन्या लग्न में जन्मे होने के कारण आप एक ज्ञानी और बुद्धिमान व्यक्ति होंगे. आपमें बहुत से गुण होंगे. तथा कई कार्य करने की खास क्षमता होगी. आप होनहार होंगे. काफी चतुर होंगे. याद्दाश्त अच्छी होगी तथा एक से अधिक भाषाओं पर आपका समान अधिकार होगा. आप हमेश अपनी कोशिशें जारी रखेंगे जिससे आप हमेशा कठोर परिश्रम के लिए तैयार रहेंगे. इसका फायदा यह होगा की समय आने पर आप बिना डांवाडोल अपनी मंजिल पाने में सफल हो जायेंगे. अपने आसपास के लोगों के विषय में झूठे भ्रम पालने की बजाय आप उनका सही–सही मुल्यांकन करने में सक्षम होंगे. जीवन के प्रति आपका नज़रिया व्यावहारिक होगा. आप किसी भी विषय का विस्तार जानने में दिलचस्पी लेंगे. चूंकि हमेशा ज्यादा से ज्यादा जानकारी और सूचनायें प्राप्त करना आपका शौक होगा. आपकी सफलता का राज आपकी कड़ी मेहनत और दूरदृष्टी में होगा. आपके विचार उन्नत होंगे और बेहद मज़बूत, प्रकारीय इच्छा शक्ति होगी. आप हकीकत पसंद, शांतिप्रिय, दृढ़ विश्वासी और ठोस इरादोंवाले होंगे. आप हमेश खुश और प्रसन्न रहेंगे. आपको दूसरों की सहायता करने से आनंद मिलेगा और आप भीड़ में बने रहना पसंद करेंगे. आपकी आय कई स्त्रोतों से होगी.

राशियों में ग्रहों की स्थिति का फल

रवि

आपके चार्ट में सूर्य कन्या राशी में स्थित है. शायद आपके मन में एक इच्छा बेहद तीव्र होगी. यह इच्छा स्त्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षीत करने की रहेगी. आप किसी भी सूरत में महिलओं के आकर्षण बिन्दु बनना चाहेगे. इस काम के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे ताकी अपने लिए ज्यादा से ज्यादा सुख–सुविधा के वस्तुए जुटा सके. वैसे इसमें आप कामयाब भी हो जायेंगे. अगर कोई अन्य कम्बस्ट ग्रह सूर्य के संपर्क में आ जाता है तो उसका असर आपकी सेहत पर नजर आएगा. तब जीवन में कुछ समय के लिए, आपको लंबे समय तक चलनेवाली बीमारियां हो सकती है. वैसे आप जीनियस होंगे. आपका मिजाज़ खुशनुमा रहेगा. आप साफ–सुथरा मनोरंजन पसंद करेंगे. आप समारोह वगैरह में लोगों का सेंटर ऑफ अर्टेक्शन बने रहने का आनंद लेंगे.

बुध

आपकी कुंड्ली में मरक्यूरी अर्थात बुध ग्रह कन्या राशी में है. आप अक्लमंद, समझदार और होनहार होंगे. आपका मिजाज़ ठीकठाक रहेगा. आपमें दूसरों का दिल जीतने की कला होगी. आप गंभीर विद्वान बन सकते है. हो सकता है कि आप बहुत ही भाषाप्रवीण हो और कोई ऐसी बडी नौकरी करे, जिसके लिए विशेष योग्यता की ज़रुरत हो. यदि, किसी प्रकार से मरक्यूरी अर्थात बुध ग्रह पीड़ित हो जाता है तो सबकुछ बुरा होगा. आपके अपने भाई–बंधुओ से दुश्मनी हो जाएगी. आप फालतू झगड़ों में फंस जायेंगे और बुरी तरह से तनाव महसूस करेंगे. आप अपने घरेलू पालतू जानवरो और मवेशियों आदि को खोने के कारण बेहद दुखी हो सकते ह

शुक्र

आपकी कुंडली में वीनस, कन्या राशी में स्थिति है. आप बुद्धिमान, सक्रिय, वाकपटु और अवलमंद बनेंगे. अगर किसी प्रकार से जब तक की जूपीटर या चन्द्रमा इससे जुड़ते नहीं है या इसके प्रभाव में नहीं आते है तो आपको कई बार निराशा का सामना करना पड़ेगा. आपके सपने तो ऊंचे–ऊंचे होंगे पर उन्हें पूरा करने के मामले में आप ज्यादा भाग्यशाली नहीं रहेंगे. अगर वीनस पीड़ित होता है तो फायनैन्शीयल मामलो में आपको काफी तकलीफ झेलनी होगी. आपके भाई–बंधु भी आपका साथ छोड़ सकते है. आप अस्थिर हो जायेंगे. आपको धन कमाने के लिए अपने घरवाले से दूर किसी इलाके में रहना पड़ेगा.

मंगल

आपकी कुंडली में मार्स यानि मंगल ग्रह कर्क राशी में स्थित है. आपका लग्न भी मंगल है. इस हिसाब से आप अपनी नौकरी और धन के मामलों में तो काफी भाग्यशाली रहेंगे, मगर आपकी सेहत सही नहीं रहेगी. आपको अपने दुश्मनों द्वारा पैदा की गई कई तकलीफें झेलनी पडेगी. अपने भाई–बंधुओ के साथ आपकी अनबन हो सकती है. जिसके कारण आप तनावग्रस्त रहेंगे. आप अपने भाई–बंधुओ से अलग रहेंगे. अगर आपका लग्नस्वामी धनु या मकर है तो आपको अपनी पत्नी के सेहत का विशेष ख्याल रखना होगा. अगर आपका लग्न मेष या वृश्चिक होता है तो आप धनी बनेंगे. यदि आपका लग्न कुंभ है तो आपका स्वभाव जल्दी क्रोधित होनेवाला रहेगा. इसके अलावा आप किसी बीमारी से परेशान रहेंगे, जिसका असर आपके सिर पर पड़ेगा.

गुरु

आपकी कुंडली में ज्यूपीटर अर्थात गुरु ग्रह, मकर राशी में स्थित है. यह संकेत शुभ नहीं है क्योंकि यहां ज्यूपीटर कमजोर पड़ गया है. अगर ज्यूपिटर नीचभंग प्राप्त कर ले, या फिर अपनी कमजोरी को हरा दे तो स्थिती सुधर सकती है. इससे आप एक चतुर इंसान बनेंगे. आपका नज़रिया व्यव्हारिक रहेगा. आप का सारा ध्यान कमाने में लगा रहेगा. लोग आपको मनी माइडेंड भी कहेगे. आपको शायद खेती–बाड़ी, वनों की वस्तुओं, तथा प्रतिदिन इस्तेमाल होनेवाली वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा. अगर ज्यूपीटर मार्स, सैटर्न वीनस या चंद्रमा का साथ देगा तो कुछ समय के लिए आपके जीवन में किसी ऐसी कारण से धन आएगा, जहां की आपको आशा नहीं होगी.

शनि

आपकी कुंडली में सैटर्न अर्थात शनि ग्रह कन्या राशी में स्थित है. आपको भूमी–विकास या फिर खेती–बाड़ी से अच्छा लाभ मिलने की संभावना है. अगर आपकी राशी में मरक्यूरी मज़बूती से जमा हुई है या फिर इस पर वीनस का प्रभाव पड़ रहा है तो आप एक ज्ञानी व्यक्ति और बहुत माननीय व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे. आप एक ऊंचे, जिम्मेदार और विश्वासपात्र ओहदे पर बिठाए जायेंगे. आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर रहेगा. आप पवित्र आत्माओं, साधु, संतो और धर्मगुरुओं को अति मान–सम्मान देंगे. आपकी संतानो में बेटियों की संख्या होगी, जो आपका सिर गर्व से ऊंचा उठाएंगी. आप उनकी सौम्यता और शोभा से हमेशा आनन्दित और गर्वीले रहेंगे.

चन्द्र

आपके चार्ट में चन्द्रमा मिथुन राशी में है. इसलिए आपकी जन्मराशी मिथुन है. आपके मानसिक धाराए एवं कुछ अन्य केरेक्टर इस राशी द्वारा प्रभावित रहेंगे. इस नर, मनुष्य और कॉमन साईन का स्वामी कुछ हद तक मरक्यूरी है.

मिथुन राशी में चन्द्रमा का होना बहुत ज्यादा लभदायक नहीं है. आपका स्वभाव दो तरह का हो सकता है. आप डबल–माईंडेड हो सकते हैं तथा आप किसी भी कार्य में ज्यादा देर टिके नहीं रहेंगे. आपका

यह दोष जीवन में आगे जाकर अवरोध पैदा करेगा. यदि किसी प्रकार चन्द्रमा अन्य ग्रहों के साथ मिलकर शुभ योग बनाएगा तो हालात बेहतर हो सकते हैं. तब आप किस्मत के धनी और सुखी व्यक्ति होंगे. आप बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे तथा आपकी रूची धार्मिक कामों में रहेगी. आप योग्य जनों का संगत का आनंद उठाऐंगे. धन अर्जित करेंगे और जीवन के सभी सुख प्राप्त करेंगे. आपको बहुत ज्यादा ट्रेवल करना पड़ सकता है. तथा आप लंबे अर्से के लिए दूर स्थान पर रहेंगे.

राहु

आपकी कुंडली में राहु मकर राशी में मौजूद है. इस स्थान पर राहु को "राशी राहु" कहा जाता है. यह एक भाग्यशाली स्थित है. यदि सैटर्न (शनि ग्रह) भी भली प्रकार से स्थित है तो इससे आपको एकाएक अपने भागीदारों या साथियों से धन प्राप्त होगा. या फिर आपका किसी वित्तीय संस्थान जैसे बँक आदि से लोन मंजूर होगा. अगर किसी तरह से राहु किसी शुभ ग्रह के साथ नहीं है या फिर उसके प्रभाव में नहीं है तो आप परेशान और तनावग्रस्त रहेंगे क्योंकि आप अपना भाग्य बचाने में असमर्थ होंगे. अगर सूर्य, राहु के समागम में है या फिर सैटर्न राहु के प्रभाव में है तो आप बदनामी के शिकार हो सकते हैं. समाज में आपकी छवि बिगड़ सकती है. यहां तक की सरकारी ॲथारिटी के साथ भी आपकी समस्या पैदा हो जाएगी.

केतु

आपकी कुंडली में केतु, कर्क राशी में स्थित है. यह एक भाग्यशाली स्थिति है. अगर चन्द्रमा भी भली–भांति से स्थित है तो आप अपना व्यापार सफलतापुर्वक चलाकर, अपने लिए आमदनी का जरिया पैदा कर लेंगे. यदि किसी प्रकार से केतू किसी शुभ ग्रह के समागम में नहीं है और न ही उसके प्रभाव में है तो आप परेशान और तनावग्रस्त रहेंगे. आप अपना बना हुआ भाग्य बचा पाने में असमर्थ रहेंगे और आपके तनाव का मुख्य कारण भी यही चिंता होगी. अगर सूर्य, केतू के समागम में है या सैटर्न केतू को प्रभावित कर रहा है तो आप बदनामी के शिकार होंगे और आपको अपमान सहना पड़ेगा. आपको सरकारी अधिकारियों के साथ भी समस्या हो सकती है. अगर चन्द्रमा शक्तिहीन है तो आपको समाज में रहनेवाले निचले तबके के लोगों से परेशानियां मिल सकती है.

इन्द्र

आपकी कुंडली में युरेनस, कुंभ राशि में स्थित है. इससे आप बुद्धिमान और अन्तर्ज्ञान वाले बनेंगे. हो सकता है कि आपको कला और विज्ञान जैसे विषयों में गंभीर दिलचस्पी रहे. इसके अलावा आप कई अलग–अलग क्षेत्रों में औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे. इससे अलावा प्राचीन साहित्य और कठिन विषय आपको बहुत ज़्यादा आकर्षित करेंगे. आप ज्ञानी बनेंगे. आपको ज्योतिषी शास्त्र, अंतरिक्ष विद्या या मनोचिकित्सा जैसे कार्यों में विशेष सफलता हासिल हो सकती है. यदि सैटर्न पीड़ित है तो आप तनावग्रस्त रहेंगे. आपको अत्याधिक तनाव से निजात पाना चाहिए.

वरुण

आपकी कुंडली में नेपचून मकर राशी में मौजूद है. अगर नेपचून, ज्यूपीटर या वीनस के समागम में नहीं है और न प्रभाव में है और सैटर्न भी मज़बूत नहीं है तो इससे आपके शरीरिक नक्श असंतुलित बनेंगे, जैसे विशाल शरीर पर छोटा चेहरा होगा या फिर ऐसा ही कुछ असंतुलन रहेगा. अगर नेपचून अशुभ ग्रह से पीड़ित है तो आप कुछ लालची बन जायेंगे और धोखे और छल–कपट भरे सौदे करने से पीछे नहीं रहेंगे.

रुद्र

आपकी कुंडली में प्लूटो, धनु राशी में मौजूद है. आप में एक खास तरह की आदत होगी. आप एक परवाह करनेवाले लापरवाह होंगे और आपके जीवन के विभिन्न उतार–चढावों में आपकी यह आदत घटती–बढ़ती रहेगी. अगर प्लूटो शुभ ग्रह के समागम में है या फिर प्रभाव में है तो इससे आपको विशेष रूप से दर्शनशास्त्र में रुची होगी. इसके अलावा आपको धार्मिक कार्यों से भी लगाव होगा. मगर यदि प्लूटो अशुभ ग्रह के समागम में है या फिर प्रभाव में है तो आपका झुकाव सट्टेबाजी, जुआ आदि की तरफ होगा और आप डींगे मारनेवाले व्यक्ति बनेंगे.

भाव फल

लग्नपति

आपकी कुंडली में लग्नस्वामी अपने स्वंय के लग्न में स्थित है. यह आपके जीवन के हर कार्य का एक सामान्य सूचक है. लग्न स्वामी की यह स्थिती अति उत्तम है और इससे ज़्यादा बेहतर स्थिती नहीं बन सकती. आप अनुकूल हालात में पैदा हुए होंगे. आपकी महत्वकांक्षाए ऊंची होगी और आपके नसीब में अपने समकालीनों से आगे, दूर तक जाना लिखा है. आप आकर्षक बनेंगे. आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बनेगा और आपमें दूसरों का दिल जीतने की काबिलियत होगी. आप न सिर्फ बहुत सक्रिय होंगे बल्कि बहुत भाग्यशाली भी होंगे. आप अपनी कोशिशों में सफल होंगे. आपको अच्छा ओहदा प्राप्त होगा. आप समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे. अपके द्वारा कोई प्रशंसनीय कार्य किया जाएगा, जिससे आपको यश मिलेगा. आपको रोग, बीमारी वगैरह कम परेशान करेंगी. आप दीर्घायू बनेंगे और सुखमय जीवन बितायेंगे आप आशावादी होंगे और हमेशा अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों से घिरे रहेंगे. शायद आपका परिवार विशाल रहेगा या फिर आप जाइंट परिवार के सदस्य होंगे. आपका घर छोटे बच्चों के शोर–शराबे से भरा रहेगा और आपके परिवार के औरतों–मर्दों के ठहाके हमेशा गूंजते रहेगा. आप धार्मिक होंगे आप भगवान को सर्मपित रहेंगे और साधु संतो को आप उचित आदर–सत्कार देंगे. आपका मिजाज़ बहुत ज़्यादा दयालू होगा और आप हमेशा ऐसे लोगों के साथ भलाई से पेश आएंगे, जो कि मसीबत में गिरफ्तार हों. आपके आदर्श ऊंचे होंगे. और आप छल–कपट की भावना से पूरी तरह मुक्त होंगे. आप स्वच्छ चरित्र होंगे. और युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत और जीती–जागती मिसाल बनेंगे.

द्वितीय भाव

आपकी कुंडली में द्वितीय स्वामी लग्न में स्थित है, जिसे तनु का घर कहते है और यह जीवन तथा सभी विषयों के लिए सामान्य संकेत है. यह योग बहुत ही अनुकूल है और आप दूसरे गृह से जुड़े हुए सभी गुणों के विषय में काफी भाग्यशाली बनेंगे. हालांकी यह योग स्वास्थ संबंधी मामलों के लिए बहुत अच्छा नहीं है क्योंकि द्वितीय घर को "मारका" कहते है–स्थिती और भी ज़्यादा बुरी होगी, यदि द्वितीय स्वामी प्राकृतिक अशुभ ग्रह है. अगर किसी प्रकार से लग्न मकर है तब सैटर्न अगर स्वयं के घर में स्थित होगा तो अनुकूल "धन योग" परिणाम देगा और छोड़ी हुई संपत्ति देगा. अगर आपका लग्न कन्या है तब कमज़ोर द्वितीय स्वामी वीनस आपकी सेहत के लिए परेशानियां पैदा कर सकता है. फिर भी आप उच्च शिक्षित बनेंगे और आपको विदेशी कारणों से लाभ प्राप्त होंगे. अगर लग्न स्वामी द्वितीय स्वामी के साथ स्थित है या फिर प्राकृतिक शुभ ग्रह द्वितीय स्वामी के साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है तब भी आप काफी अमीर बनेंगे. अगर लग्नस्वामी भली प्रकार से स्थित नहीं है इस बीच प्राकृतिक अशुभ ग्रह (जो या तो ज्वलंत है या ग्रहण में है) लग्न में स्थित है, तब शायद आप स्वास्थ से जुड़े मसलों को लेकर पीड़ित रहेंगे और आपका भविष्य भी प्रभावित होगा.

तृतीय भाव

आपकी कुंडली में तीसरा स्वामी ग्यारहवें घर में स्थित है जो कि लाभ का गृह कहलाता है. यदि चौथा स्वामी भली प्रकार स्थित नहीं है, तब ग्यारहवें घर में तीसरा स्वामी आपकी माताजी की कुशलता और सेहत के लिए बिलकुल भी उचित नहीं है. फिर भी अन्य विषयों में यह स्थिती आपके लिए उचित है. जैसे कि आप रिश्तेदारों और दोस्तों से सहायता और सहारा प्राप्त करेंगे. इसके अलावा कई कारणों से आपको लाभ प्राप्त होंगे. अगर ग्यारहवां स्वामी भी भली प्रकार स्थित है या फिर कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह ग्याहरवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तो आपकी स्थिती और भी ज़्यादा उत्तम बनेगी.

यह स्थिती आपको ज़्यादा से ज़्यादा घर से बाहर होनेवाली क्रियाओं के प्रति आकर्षित करेगी. आपको लोगों से मिलना–जुलना पसंद होगा. आप बहुत सी यात्रायें करेंगे. और बहुत से स्थानों पर जायेंगे. शायद आप सामाजिक और लोकहित से संबंध रखते हुए कार्यों में सक्रिय बनकर भाग लेंगे. इसके पीछे आपके मन में छिपी वह गुप्त भावना हो सकती है, जिसके मुताबिक आप सामाजिक और राजनीतिक तौर पर ख्याती प्राप्त करना चाहेंगे. यदि कोई प्राकृतिक अशुभ ग्रह ग्यारहवें घर में है या प्रभाव दे रहा है तब आपकी आमदनी में बुरी तरह के उतार चढ़ाव आ सकते है और शायद आपका कोई सहायक पूरी तरह से भरोसे के काबिल नहीं होगा. अगर केतू या सैटर्न ग्यारहवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहे हों तो दशा और भी ज़्यादा दयनीय हो जाएगी आप शायद स्वयं ही लचीले आर्दर्शों के व्यक्ति बन जायेंगे. अगर सूर्य य ज्युपीटर भी ग्यारहवें घर में स्थित है तब शायद आप अपने भाई–बहनो में सबसे बड़े होंगे और जल्द ही विद्वान बन जायेंगे और सही रास्ते पर चलेंगे.

चतुर्थ भाव

आपकी कुंडली में चतुर्थ स्वामी पांचवे घर में स्थित है जो कि पूर्व–पूण्य का घर कहलाता है. चौथे घर की विशेषताओं में से शिक्षा भी एक विशेषता है जबकि इस घर की मुख्य विशेषतायें बुद्धि और श्रेष्ठता आदी हैं. आप बुद्धिमान और गुणसंपन्न बनेंगे और सम्मान के साथ अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे. पांचवे घर में चतुर्थ स्वामी के स्थित होने से शायद आपको छात्रवृत्ति द्वारा शिक्षा प्राप्त होगी. ऐसा लगता है जैसे आप अपने कार्यक्षेत्र या कैरियर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करेंगे. अगर मरक्यूरी भली प्रकार स्थित है तो इस बात की संभावनायें बढ जायेंगी. चौथे घर फायदों के ऊपर भी शासन करता है. इस बीच पांचवे घर से यह ग्यारहवें घर पर भी प्रभाव दे रहा है. इससे यह निश्चित है कि आप न सिर्फ अपने कार्यक्षेत्र से अच्छी आमदनी हासिल करेंगे बल्की आपको दोस्तों और जान–पहचानवालों से भी लाभ प्राप्त करेंगे. यदि ग्यारहवां स्वामी भी भली प्रकार से स्थित है या प्राकृतिक शुभ ग्रह चौथे ग्रह पांचवे ग्रह या ग्यारहवें ग्रह में मौजूद है या प्रभाव दे रहे हैं तो आप अपने लिए एक लाभदायक नौकरी सुरक्षित कर लेंगे. क्योंकि पांचवे से चौथा ग्रह बारहवें स्थान पर है, अतः यह स्थिती प्रसव के लिए उपयुक्त नहीं है. अगर चतुर्थ स्वामी प्राकृतिक अशुभ ग्रह है या पांचवे ग्रह में प्राकृतिक अशुभ ग्रह स्थित है तो हालात और भी बुरे होंगे. यदि राहु या केतू में से कोई एक पांचवे ग्रह में स्थित है तो आप कार्य विशेष से संबंधित शिक्षा प्राप्त करेंगे मगर इससे प्रसव में दिक्कतें पैदा होगी.

पंचम भाव

आपकी कुंडली में पाचवां स्वामी लग्न में स्थित है इसे तनु गृह कहा जाता है. पाचवां स्वामी पूर्व–पून्य, योग्यता, बुद्धि, पद, सगी संतान, नाना या दादा आदी का संकेत देता है. आप इन सभी विषयों में बहुत भाग्यशाली बनेंगे. आप बुद्धिमान और योग्य बनेंगे आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको सम्मानजनक ओहदा प्राप्त होगा. आपके सर्विस में होने की संभावनायें ज़्यादा है यदि सूर्य सही तरह से स्थित है तो ज़्यादा अच्छे परिणामों की आशा की जा सकती है अगर मरक्यूरी भली प्रकार स्थित है तो आपको ऐसे कार्यों में ज़्यादा दिलचस्पी होगी जहां पैसा, पैसा को अपनी ओर खींचता है. और यदि वीनस भली प्रकार स्थित है तो शायद आपको मनोरंजन क्षेत्र अपनी ओर आकर्षित करेगा. अपने बचपन में आप अपने दादा के प्रिय बने रहेंगे और जब आप व्यस्क होंगे तब आपको कर्तव्यनिष्ठ संतान प्राप्त होगी. अगर ज्यूपीटर भली तरीके से स्थित है तो सुखों में इजाफा होगा. यदि आपका लग्न मेष या तुला है तब पांचवा स्वामी लग्न के अंदर शक्ती प्राप्त कर लेगा और आप बहुत ही भाग्यशाली बन जायेंगे. यदि मरक्यूरी भी भली प्रकार स्थित है तो आप बढ़िया शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपको छात्रवृत्ति भी मिल सकती है. पर यदि आपका लग्न कर्क है तब पांचवा स्वामी कमज़ोर पड़ जाएगा. हालांकि तब यह स्थिती भौतिक सुख–सुविधायें तो देगी मगर शायद आपको सेहत से संबंधित समस्यायें होगी और आप संतान पक्ष की ओर से भी दुखी से बने रहेंगे. शायद आपको अपना घर छोड़ना पड़ेगा और आप आमदनी के लिए किसी दूर–दराज़ के इलाके में जाकर रहेंगे. शायद कई बार अचानक आपको अपनी

नौकरी बदलनी भी पड़ जाएगी.

षष्ठी भाव

आपकी कुंडली में छठा स्वामी लग्न में स्थित है. इसे तनु गृह कहते है. यदि आपका लग्न कर्क है तब तीसरा स्वामी ज्यूपीटर शक्ति प्राप्त कर लेगा (लग्न के अंदर) क्योंकि ज्यूपीटर नवां स्वामी भी होगा. इससे आप कुलीन व्यक्ति बनेंगे, आपका स्वास्थ बहुत अच्छा रहेगा. आप अक्सर प्रशंसायोग्य कार्यों में व्यस्त रहेंगे और बहुत–बहुत भाग्यशाली बनेंगे. यदि आपका लग्न वृषभ या वृश्चिक में से कोई एक है तब लग्न में मौजूद छठा स्वामी स्वयं की राशी में स्थित होगा. तब आप हमेशा खुश रहेंगे. इसके साथ ही आप बीमारियों से भी मुक्त होंगे. आपको शत्रुओं द्वारा दिये गये कष्टों को नहीं उठाना पड़ेगा और आप सभी प्रकार कि प्रतियोगिताओं और प्रतियोगी परिक्षाओं में सफलता हासिल करेंगे. अगर आपका लग्न सिंह है तब आपका छठा स्वामी सांतवा स्वामी भी बन जाएगा. इससे आपका स्वभाव झगड़ालू बन सकता है और आप अपने रिश्तेदारों तक का विरोध करेंगे. अगर आपका लग्न मेष या तुला है तब आपका छठा स्वामी आपका तीसरा स्वामी भी बन जाएगा, इस योग से आपको परिवर्तनीय स्वभाव मिलेगा और आपका यात्राओं से विशेष लगाव होगा. यदि आपका लग्न मिथुन या धनु है तब छठा स्वामी काफी कुछ ग्यारहवें स्वामी जैसा बरताव करेगा, इससे आपको कई कारणों से आमदनी व लाभ प्राप्त होंगे और आप हमेशा अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के बीच घिरे रहेंगे. दूसरे विषयों में यह स्थिती ज़्यादा उपयुक्त नहीं बनेगी क्योंकि तब आपको बीमारियों से पीड़ित होना पड़ेगा और शत्रुओं द्वारा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा.

सप्तम भाव

आपकी कुंडली में सातवां स्वामी लग्न में मौजूद है. इसे तनुगृह (शरीर का घर) कहते है. जैसा की सातवां स्वामी सातवें गृह को प्रभाव देता है. इससे आप सातवें गृह से जुड़े विषयों जैसे वैवाहिक संबंधो, स्वयं का व्यापार, व्यापार सहयोगी आदी के विषयों में भाग्यशाली बनेंगे. इसके अलावा आप (यदि है) सार्वजनिक सौदेबाजियों, ठेकेदारी विदेशी मामलों (यदि योग्य है) या यात्राओं आदी के विषयों में भी भाग्यशाली बनेंगे. यदि लग्न–स्वामी भी सातवें घर में स्थित है तब आप योग्य एडमिनिस्ट्रार बनेंगे और अपनी दूरदर्शिता और योग्य तरकीबों के लिए प्रसिद्धी प्राप्त कर लेंगे.

यदि आपका लग्न कर्क है तब आपका सातवां स्वामी जो है, वह आठवां स्वामी भी बन जाएगा. इसके साथ ही यह सातवें घर पर प्रभाव देगा, तब आपके तथा आपकी पत्नी/पती के स्वास्थ पर कुछ ध्यान देने जरूरत होगी. इसके अलावा यदि मार्स (मंगल ग्रह) आठवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तब आपका मिजाज़ योद्धा किस्म का सा बनेगा और शायद आप अपने जीवन में ऐसी कुछ गतिविधियों में भी सम्मिलित रहेंगे जिनसे आपके लिए हथियारों द्वारा या दुर्घटनाओं द्वारा घायल होने का खतरा भी बना रहेगा. यदि लग्न स्वामी या प्राकृतिक शुभ ग्रह लग्न में मौजूद है या प्रभाव दे रहा है तब आपकी आयु लंबी बनेगी.

यदि आपका लग्न वृषभ या वृश्चिक है, तब शायद आपकी सेहत प्रभावित रहेगी. तब शायद आपको किसी दूर के इलाके में या विदेश जाकर अपने जीवन का लंबा अरसा व्यतीत करना पड़ेगा और वहां पर शायद आपको कुछ नुक्सान भी झेलने पड़ेंगे. मगर क्योंकी सातवां स्वामी, सातवें घर को प्रभाव दे रहा होगा, आप एक बहुत प्रेम करनेवाली/वाले और ध्यान रखनेवाली/वाले पत्नी/पति के विषय में भाग्यशाली बनेंगे, जो की लंबी आयु प्राप्त करेंगी/गें. यदि आपका लग्न सिंह है तब आपका सातवां स्वामी जो है वह आपका छठा स्वामी भी बन जाएगा, इससे शायद उम्र की शुरूआती दौर में आपकी सेहत कुछ नाजुक सी रहेगी. हालांकि आप अपने शुरूआती दिनों में कोई नौकरी करेंगे, मगर बाद में शायद आपका अपना कोई तीव्र गती का व्यापार स्थापित हो जाएगा.

अष्ठम भाव

आपकी कुंडली में आठवां स्वामी ग्यारहवें घर में मौजूद है, जिसे लाभगृह या लाभ का घर कहते है. ग्यारहवें घर से आपका आठवां घर दसवां बन जाता है, इससे आपको अपने कार्य क्षेत्र से उत्तम लाभ तो प्राप्त होंगे मगर अचानक किसी कठिनाई या अवरोध के कारण कुछ समय के लिए आपकी आमदनी में रुकावटें आयेंगी. आठवां स्वामी दुराचारी जनों पर शासन करता है. और ग्यारहवां मित्रों पर शासित है, अतः इससे आपके कुछ ऐसे मित्र बनेंगे, जिन्हें खतरों से प्रेम होगा और आग से खेलना जिनका शौक होगा. क्योंकि ग्यारहवां घर शस्त्रों पर शासन करता है और आठवां घर हथियारों पर शासन करता है, अतः इस कारण आप अपने पास कोई हथियार वगैरह रखेंगे और उन्हें इस्तेमाल करने की कला सीखेंगे– इन योगों में और भी वृद्धी होगी, यदि प्राकृतिक अशुभ ग्रह ग्यारहवें घर में मौजूद है या उसे असर दे रहा है और आपका यदि आठवां घर भी ऐसे ही स्वभाव वाला है. अगर आपका तीसरा स्वामी आपके दसवें घर में स्थित है या प्रभाव दे रहा है, तब आप अन्य जनों को नुक्सान देने का कारण बननाचाहेंगे. यदि आपकी कुंडली में सातवां घर भले स्वभाव का नहीं है तो कुछ लोग आपके क्रोध का शिकार बनेंगे. अगर मार्स और सैटर्न या ज्यूपीटर और वीनस एक दूसरे के विरोध में है या विरोध में एक पिछला है और एक हाल का है, तब आप अपराधिक कार्यों में उलझ जायेंगे.

नवम भाव

आपनी कुंडली में नवां स्वामी जो है, वह लग्न में मौजूद है. इसे तनुग्रह या तनु का घर कहते है. क्योंकि नवां घर भाग्य का संकेत देता है अतः आप बहुत भाग्यशाली बनेंगे. यदि आपका लग्न वृषभ है तब आपका जो नवां स्वामी है वह आपका दसवां स्वामी भी बन जायेगा और इससे आप पर जीवनभर भौतिक सुखों की बरसात होती रहेगी. मगर यदि आपका लग्न वृश्चिक है तब आपको बिल्कुल विपरीत परिणाम मिलेगी. क्योंकि तब आपका नवां स्वामी कमज़ोर बन जाएगा. शायद आपके पिता किसी दूर स्थान या विदेश में रहेंगे. वरना उनके कार्यक्षेत्र या कुछ संबंध सेवा के साथ जुड़ा होगा. शायद आपका जन्म किसी दूर स्थान पर या विदेश में हुआ होगा या फिर बचपन में ही आप किसी ऐसे स्थान पर लंबे अरसे के लिए जायेंगे और वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे. अगर अपका लग्न स्वामी या आपका पांचवा स्वामी या आपका दसवां स्वामी भले ढंग से स्थित है या यदि इन घरो में कोई कुदरती शुभ ग्रह स्थित है या प्रभाव दे रहा है तब पक्के तौर पर अपने जीवन में आप ऊंचा मुकाम हासिल करेंगे. यदि आप लग्न वृश्चिक या मीन है और यदि आपका लग्न स्वामी पांचवें घर में स्थित है तब क्योंकि आपका लग्न स्वामी शक्ती प्राप्त कर लेगा और इससे आप झुकाव धर्म के प्रति ज़्यादा बढ़ जाएगा. आप साधु संतो जैसा जीवन बिताना शुरू कर देंगे और सांस्कृतिक या धार्मिक समारोहों के कारण संसार में कई बार घूमेंगे.

अगर सूर्य या मार्स दसवें घर में स्थित है तब आपका यश चारो ओर फैलेगा और आपको राज सम्मान प्राप्त होगा. यदि सैटर्न या राहु आपके सातवें घर में मौजूद है, तब अपकी गूढ़ नीतियों के कारण आप प्रसिद्ध बन जायेंगे.

दशम भाव

आपकी कुंडली में दसवां स्वामी लग्न में स्थित है. इसे तनु गृह कहते है. यह एक अति भाग्यशाली योग है क्योंकि इससे आप एक सक्रिय व्यक्ति बनेंगे और अपने कार्य के विषय में बहुत भाग्यशाली बनेंगे. इस उत्तम योग में और भी वृद्धी होगी यदि आपका लग्न कन्या है तब आपका दसवां स्वामी आपके लग्न में शक्ति हासिल कर लेगा. अगर आपका लग्न मीन है तो दसवां स्वामी स्वयं के घर में

होगा. उपरोक्त दोनों मामलों में आप लाभदायक पांच महापुरूष योग के परिणामों से आनंद लेंगे. यदि आपका लग्न मेष या कर्क है तब आपका दसवां स्वामी लग्न में दुर्बलता प्राप्त कर लेगा और यदि लग्न स्वामी भली प्रकार स्थित नहीं है या कुदरती शुभ ग्रह आपके दसवें घर में मौजूद नहीं है और न इसपर असर दे रहा है तब आप कर्म के विषय में भाग्यशाली नहीं बनेंगे. यह प्रभाव मेष लग्नवालो के लिए और ज़्यादा बनेंगे क्योंकि शनि बाधक का काम करेगा. दसवें घर पर इसका प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र में बहुत सी रुकावटें पैदा करेंगे और मेष लग्न के लिए जूपीटर लाभदायक नहिं है क्योंकि दसवें घर में यह कमज़ोर हो जाएगा. सारे लग्नों के लिए यदि सूर्य या मार्स दसवें घर में मौजूद है तब आपको अतिफलदायक परिणाम मिलेंगे क्योंकि तब ग्रह दिशा शक्ति हासिल कर लेगा तब मेष लग्न के लिए यह उत्तम प्रभाव बढ़ जायेंगे क्योंकि दसवें घर में आपका लग्न स्वामी शक्ति प्राप्त कर लेगा. यदि लग्नस्वामी भी दसवें घर में है या कोई कुदरती शुभ ग्रह दसवें घर में मौजूद है या इसपर असर डाल रहा है तब उत्तम परिणामों की आशा की जा सकती है.

एकादशम भाव

आपकी कुंडली में ग्यारहवां स्वामी दसवें घर में विराजमान है. इसे कर्मगृह कहते है. यह एक अनुकूल स्थिती है और इसमें पक्के तौर से आप उत्तम आमदनी प्राप्त करेंगे. इसके अलावा, इससे आपको अपने कार्यस्थल में ही बहुत से अच्छे मित्र मिलेंगे. यदि आपका दसवां स्वामी ग्यारहवें घर में है या स्वयं के दसवें घर में स्थित है या फिर कुदरती शुभ ग्रह आपके दसवें या ग्यारहवें घर में मौजूद है या दोनों में से किसी एक पर प्रभाव दे रहा है, तब आपके कार्यक्षेत्र में और भी ज़्यादा उल्लेखनीय सुधार आयेंगे. इससे आपको फलदायक और सम्मानजनक ओहदा हासिल होगा और इससे आपको कुछ प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि भी बखूबी मिलेगी. अगर आपका लग्न मेष है तो आपका ग्यारहवां स्वामी आपका दसवां स्वामी भी बन जायेगा और स्वयं के घर में स्थित होने के कारण यह आपको मंगलकारी पांच महापुरूष योग के फलदायक परिणाम देगा. मगर यदि आपका लग्न धनु है तो दसवें गृह में आपका ग्यारहवां स्वामी कमज़ोर बन जाएगा. अगर मरक्यूरी भी दसवें घर में स्थित है या फिर जूपीटर आपके दसवें गृह में मौजूद है या इसे प्रभाव दे रहा है तब शायद आप अपने कार्यक्षेत्र के विषय में ज़्यादा भाग्यशाली नहीं बनेंगे और यदि आपका कोई बड़ा भाई या बहन है तब उनका स्वास्थ नाजुक होगा तथा वे किसी नुक्सान से पीड़ित होंगे. अगर सूर्य और मार्स भी आपके दसवें घर में मौजूद है तब आप मंगलकारी परिणामों का आनंद लेंगे. क्योंकि तब ग्रह दिशा शक्ति प्राप्त कर लेगा इस घर में राहु भी लाभदायक परिणाम देता है मगर यदि शनि यहां पर मौजूद है तब आप जीवन में बहुत ऊंचाई पर पहूंच जाने के बाद पतन में गिर पड़ेंगे बुरे प्रभाव में और भी वृद्धी होगी यदि ग्रह वक्री है. अगर कोई कुदरती शुभ ग्रह दसवें घर में मौजूद है या इसपर असर दे रहा है तब यह आपके मान–सम्मान को सुरक्षा प्रदान करेगा.

द्वादशम भाव

आपकी कुंडली में बारहवां स्वामी लग्न में विराजमान है. इसे तनुगृह कहते है. यह स्थिती से आप काल्पनिक और सपनों में रहनेवाले व्यक्ति बनते हैं. अगर जूपीटर या मार्स आपके बारहवें घर को या इसके स्वामी को प्रभावित करते हैं तब विलक्षण और रहस्यमय विषयों में आपकी गहरी दिलचस्पी बनेगी. अगर अपना लग्न कुंभ है तब आपका जो बारहवां स्वामी है वह आपका लग्न स्वामी भी बन ज्रृयेगा और फिर यह ज़्यादा से ज़्यादा आपके लग्न स्वामी या बर्ताव करेगा. ऐसे मामलों में आप केवल उपयुक्त परिणामों की आशा कर सकते हैं क्योंकि लग्न के अंदर लग्न स्वामी की उपस्थिती आपके चारो तरफ केवल सुख समृद्धी की ही घोषणा करती है. अगर आपका लग्न मेष या तुला है तब आपका बारहवां स्वामी आपका नौवां स्वामी भी बन जायेगा इससे आप एक धार्मिक व्यक्ति बनेंगे और सामान्य विषयों में भाग्यशाली होंगे. शायद आप अपने ही देश में दूरस्थ स्थानों की या फिर विदेशों की यात्रा करेंगे और ऐसे स्थानों से लाभ कमायेंगे और यदि आपका मरक्यूरी भी भले तरीके से स्थित है

तो आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे. अगर आपका लग्न धनु या मिथुन है, तब आपका बारहवां स्वामी जो है वह आपका पांचवां स्वामी भी बन जायेगा यह आपको उत्तम शिक्षा देगा. व्यापार से लाभ देगा और आप योग्य संतान की प्राप्ती के विषय में भाग्यशाली बन जायेंगे. यदि आप लग्न सिंह है तो यह शुद्ध रूप से तटस्थ रहेगा और यदि सूर्य आपके बारहवें घर में है तब आप देश में दुरस्थ स्थानों या विदेशों से लाभ कमायेंगे. मगर यदि आपका लग्न मकर है तब आपका बारहवां स्वामी जो है वह लग्न में दुर्बल पड़ जायेगा और आपके लिए भारी घाटों और खर्चों का कारण बनेगा इन लक्षणों में और भी इजाफे आ सकते है यदि आपका शनि भले ढंग से स्थित नहीं है. अगर आपका लग्न कुछ और है तो आप अपनी संतान की ओर से कुछ दुखी रहेंगे.

भावों में ग्रहों की स्थिती का फल

रवि

आपके लग्न में सूर्य स्थित है. इससे आप स्पष्टवादी, फ्रेंक और उपकारी स्वभाव वाले बनेंगे. आप आत्मनिर्भर और स्थिर होंगे. आपको प्रसिद्धि और दिखावे से प्रेम होगा और आप विपक्ष गुटों और दलों को घृणा की नजर से देखेंगे. आपके मॉटिव ऊंचे होंगे और आपको वाह–वाही मिलेगी. आप अपने परिश्रम में सफल रहेंगे तथा लोगों आपके साथ बहुत सम्मानजनक बरताव करेंगे. आप धार्मिक होंगे और छोटे–छोटे बच्चों से आपका खास लगाव होगा. आप अपने पिताजी के ज़्यादा करीब होंगे तथा आप वरिष्ठ लोगों से या अधिकारियों से विशेष सहायता प्राप्त करेंगे और आपको सरकार से या फिर राजनीतिक कारणों से भी बहुत से लाभ मिलेंगे. अगर आप लग्न मेष या सिंह है तो सूर्य अपने घर में काफी शक्तिशाली हो जाएगा. इससे आप योग्य संतान के विषय में काफी भाग्यशाली बन जायेंगे. आपकी पहली संतान लडका यानि बेटा होगा, जो कि आपके परिवार के लिए गर्व का कारण बनेगा. अगर आपका लग्न तुला है तो सूर्य कमज़ोर हो जाएगा इससे आप कोई पुश्तैनि बीमारी से पीड़ित हो सकते है, वरिष्ठ अधिकारियों या सरकारी अधिकारियों आदि के साथ आपकी कोई समस्या हो सकती है और आपको मुकदमे वगैरह का सामना करना पड़ सकता है. अगर सूर्य, राहु या सैटर्न के समागम में है या सैटर्न द्वारा प्रभावित हो रहा है तो आपको अपनी प्रसिद्धि खोने का भी खतरा रहेगा.

बुध

आपके लग्न में मरक्यूरी यानि बुध ग्रह स्थित है. इससे आप आराम न करनेवाले, बैचेन और न रुकनेवाले कौतुहल, जिज्ञासू स्वभाव के मालिक बनेंगे. आप हमेशा नई–नई सूचनाओ के विषय में जानने के लिए जागरुक रहेंगे. आपके पास वाकपटुता का उपहार होगा और आप स्वभाव विनोदी बनेगा. आप अपने जीवन में बहुत सी यात्रायें करेंगे तथा शायद आप कोई ऐसा काम करेंगे, जिसमें लेखन कार्य काफी ज़्यादा होगा. शायद आपको किसी किस्म के साहित्य का भी शौक होगा. अगर मरक्यूरी अपने घर में स्थित है या शक्तिशाली है तो आप अपनी कलम के जादू द्वारा खुद को प्रसिद्ध करेंगे. गर तब आपका लग्न मिथुन या कन्या है तो आप अति भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि तब यह शक्तिशाली होगा या स्वयं के घर में होगा. इससे आपको पांच महापुरूष योग के लाभदायक परिणाम मिलेंगे. यदि आपका लग्न मीन है तब कमज़ोर मरक्यूरि आपके स्वास्थ में समस्याएं पैदा कर सकता है. या फिर आप नर्वस डिसऑर्डर का शिकार हो जायेंगे. इसके अलावा शायद आपको अपने पानी में मिल गए व्यापार को चलाने के लिए भी काफी मेहनत करनी पड़ेगी. या फिर आपको किसी निजी संस्था में कोई विचित्र सा कार्य करना पड़ सकता है अगर ज्यूपीटर इसके साथ है या प्रभाव में है तो आप विद्वान, ज्ञानी, शिक्षित और बुद्धिमान बनेंगे. अगर वीनस साथ में है तो आपको कलात्मकता की ओर

झुकाव रहेगा या फिर आपको कुछ विशेष गुण प्राप्त होंगे. अगर राहु साथ में है तो आपके विचार शायद उलझे से रहेंगे मगर यदि केतू साथ है तो आप शायद कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करेंगे या फिर छोटे कार्यों में सौदेबाजी करके लाभ प्राप्त करेंगे.

शुक्र

आपके लग्न में प्राकृतिक शुभ ग्रह वीनस स्थित है. इससे आप मिलनसार बनेंगे. आप समाज सेवक बनेंगे और आपकी, महान संगत, शान–ओ–शौकत, गायकी, नृत्य आदि में गहरी रुचि होगी और आपको फाईन आर्ट में विशेष महारत प्राप्त होगी. आपको हर तरह की चमक–दमक से बहुत प्रेम होगा. आपको सुविधाओं और ठाठ–बाठ से प्रेम होगा. आप काफी कुछ हद तक नए–नए कपड़ों, इत्रो–सुगंधो, गहनो और निजी सजावट की वस्तुओं पर भारी खर्च करनेवाले बनेंगे.

आपका घरेलू जीवन शांत और सुखद होगा. सामाजिक तौर पर आप याद रखे जाने वाले और जानी पहचानी हस्ती बनेंगे. अगर आपका लग्न, वृषभ तुला या मीन है तो आप और भी ज़्यादा भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि तब यह स्वयं के घर में होगा या फिर शक्तिशाली बन जाएगा और आप पांच महापुरूष योग के लाभदायक फलों का आनन्द लेंगे. अगर आपका लग्न कन्या है तब कमजोर वीनस आपके स्वास्थ के लिए समस्याएं पैदा करेगा और आप अपने कार्यक्षेत्र में विशेष भाग्यशाली नहीं रह जायेंगे. जब तक की मरक्यूरी भली प्रकार न स्थित हो या फिर दोनों में से कोई भी चन्द्रमा या ज्यूपीटर इसके साथ हो या फिर प्रभाव दे रहे हो. अगर वीनस सूर्य के करीब है तो आपको आँखों से संबंधित परेशानी होगी और आप ऐनक पहनेगे. अगर यह शनि के करीब है तो आपका मिजाज़ गंभीर बनेगा. यदि चन्द्रमा के नज़दीक है तो आपकी प्रकृति हमेशा आनंदित और खुश रहेगी. अगर राहु या केतू के करीब है तो आप लालची बन सकते है और अपनी लालसाओ को भर पाना आपके लिए कठिन होगा.

मंगल

मार्स आपके ग्यारहवें घर में मौजूद है. आप अपनी आमदनी और भौतिक सुखों के विषय में भाग्यशाली बनेंगे. मगर शायद आपको कुछ कष्टकारी किस्म की समस्याओं से गुजरना पड़ेगा. यदि मार्स शक्तिशाली नहीं है या स्वयं के घर में मौजूद नहीं है तो आपकी माताजी के स्वास्थ तथा कुशलता की ओर कुछ ध्यान देने की जरूरत पड़ेगी. इस प्रभाव में और भी इजाफा होंगा यदि चंद्रमा इसके साथ है या इसपर अपना असर कर रहा है. शायद आप गर्म पारे के समान होंगे. आप गुस्सैल होंगे और शायद आपका डीलडौल धीरे–धीरे भारी आकार ले लेगा जिससे आप असुविधा महसूस करेंगे और इस कारण किसी व्याधी से पीड़ित हो सकते हैं. यदि आपका लग्न मीन मिथुन या मकर है तब आपको उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे. क्योंकि तब आपका मार्स शक्ति हासिल कर लेगा या स्वयं के घर के स्थित हो जाएगा. इससे आपको संपत्ति किराए या रियल इस्टेट इत्यादि द्वारा उत्तम आमदनी प्राप्त होगी. अगर आपका लग्न कन्या है तो दुर्बल हो चुका मार्स आपके लिए कई परेशानियां पैदा कर सकता है. यदि आपकी कुंडली में कुछ भी बेहतर योग नहीं है तो यह स्थिती मित्रों की बीच में विवाद उत्पन्न करती है और रिश्तेदारों तथा जान–पहचान के लोगों के साथ असंतुष्ट रिश्ते बनाती है. उनमें दरार पैदा करती है. इसके अलावा अचानक आपके कार्यस्थल या निवासस्थान पर आगजनी के कारण, आपको घाटे भी उठाने पड़ सकते हैं. यदि कोई कुदरती अशुभ ग्रह इसके साथ है या इसपर प्रभाव दे रहा है तो शायद आपको लूटमार, चोरी–चकारी द्वारा नुक्सान उठाने पड़ सकते हैं. या फिर हो सकता है कि आपको यह घाटे अपने किसी विश्वासपात्र के छल द्वारा उठाने पड़ें. अगर सूर्य भली प्रकार स्थित नहीं है तो शायद सरकारी अधिकारियों के साथ आपकी कुछ समस्यायें पैदा होगी. यदि आपका आठवां स्वामी मार्स के साथ है या इसपर अपना असर कर रहा है तो आपको अनचाहे लोगों के साथ रहना पड़ेगा या फिर आप पुलिस का ध्यान अपनी ओर खींचेगे.

गुरु

ज्युपिटर आपके पांचवे घर में स्थित है. इससे आप एक गुणी इंसान बनेंगे और आप अति–अति भाग्यशाली बनेंगे क्योंकि सारे उत्तम प्राकृतिक शुभ ग्रह आप पर प्रभाव देंगे. जैसे नवां (पिता भाग्य आदि) ग्यारहवां (आमदनी, मित्र आदि) और लग्न (शरीर, सामान्यतौर पर होनेवाले सभी विषय), इसके अलावा विनम्रता आपके पांचवे घर की (योग्यता ओहदा, संतानप्राप्ती आदि) सुरक्षा कर रही है. इन सभी शुभ प्रभावों में वृद्धी होगी, यदि आपका लग्न मीन है, क्योंकि तब ज्यूपीटर शक्ति प्राप्त कर लेगा. या फिर अगर आपका लग्न सिंह या वृश्चिक है क्योंकि तब ज्युपीटर स्वयं की घर में स्थित होगा. तब आपका जन्म कुलीन परिवार में होगा और आपके खाते में बहुत सारे पूर्व–पूण्य होंगे. आप सुखी वातावरण में लंबी आयु जियेंगे और कुछ रचनात्मक क्षेत्रों में अपनी निशानियां छोड़ जायेंगे. आप अपने दादा पिता और संतानो की विषय में भाग्यशाली बनेंगे. आप विद्वान व्यक्ति बनेंगे और आप झुकाव धार्मिक कार्यों कि ओर बना रहेगा. आप दूर देशों की बहुत सारी यात्रायें करेंगे और शायद किसी धार्मिक समारोह के सिलसिले में विदेशयात्रा भी करेंगे शायद आप तीर्थस्थानों की यात्रा भी करेंगे. यदि आपका लग्न कन्या है तो पांचवे घर में स्थित ज्यूपीटर कमज़ोर बन जाएगा, तब आप अपनी शिक्षा के विषय में भाग्यशाली नहीं बनेंगे और आपको संतान प्राप्ती में भी कष्ट होंगे अगर सैटर्न भली प्रकार स्थित नहीं है या प्राकृतिक शुभ ग्रह जैसे वीनस या मरक्यूरी के प्रभाव में पांचवे घर पर नहीं आ रहे.

शनि

आपके लग्न में सैटर्न यानि शनि ग्रह स्थित है. इससे आप धैर्य और दीर्घ प्रयत्न की मिसाल बनेंगे. आपका चेहरा–मोहरा गंभीर सा दिखेगा या फिर आपका मिजाज़ काफी गंभीर, शर्मीला और रिजर्व रहनेवाला बनेगा. आपकी मानसिक अवस्था शायद उदास सी होगी तथा आपको अकेला रहना पसंद होगा. शयद आपको कम उम्र में काफी कड़वे अनुभव झेलने पडेगे, जैसे हो सकता है कि आप अपने किसी प्रिय को खो दें, या फिर आपको किसी कड़े संघर्ष से गुजरना पड़ जाए. शायद आप कुछ निराशावादी बनेंगे तथा दूसरे लोग आपके ऊपर भरोसा नहीं करेंगे. हालांकि आप सावधान होंगे और काफी दूर की सोचने वाले रहेंगे.

अगर योग में चन्द्रमा भी लग्न में स्थित है तो शायद आप कड़वी और खरी–खोटी सुनाने वाला बनेंगे.

अगर आपका लग्न तुला, मकर या कुंभ है, तब आप भाग्यशाली बनेंगे, क्योंकि उस दशा में यह शक्तिशाली हो जाएगा या स्वयं के घर में होगा और आप पांच महापुरूष योग के लाभ प्राप्त करेंगे. सैटर्न आपकी सेहत में परेशानियां उत्पन्न करेगा और आप अपने कार्य क्षेत्र में ज़्यादा भाग्यशाली नहीं रह जायेंगे. अगर सैटर्न सूर्य के करीब है तो आप आँख से संबंधित बीमारी से पीड़ित होंगे और ऐनक पहनेंगे. अगर लग्न–स्वामी शक्तिशाली नहीं है और शनिग्रह के साथ कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह नहीं है (और न प्रभाव दे रहा है) तो शायद आप हड्डी कि टूटन से पीड़ित हो सकते हैं.

चन्द्र

चंद्रमा आपके दसवें घर में मौजूद है. आपके मन में सार्वजनिक जीवन जीने की गहरी इच्छा रहेगी और आप बहुत प्रसिद्ध बन सकते हैं. शायद आपके कार्यक्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जनता के जीवन पर शासन करना होगा और महिलाएं आपके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी. आपका जीवन बनाने या बिगाड़ने में महिलाओं का बहुत बड़ा हाथ होगा. यह कहने की जरूरत नहीं है कि आप बेहतर परिणामों से फलिभूत होंगे यदि आपका चंद्रमा बढ़ रहा है. और कोई कुदरती शुभ ग्रह चंद्रमा के साथ है या इसे प्रभाव दे रहा है या फिर आपका चंद्रमा शक्ति प्राप्त कर चुका है या स्वयं के घर में स्थापित है. अगर आपका लग्न तुला है तो शायद आप कोई व्यापार करेंगे शायद कोई

दवाईघर या रेस्त्रां. यदि आपका लग्न सिंह है तो शायद अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ आप किसी नौकरी में रहेंगे. शायद किसी अस्पताल, संरक्षकगृह या किसी पुनर्वास केंद्र में. अगर आप लग्न कुंभ है तो दसवें में कमज़ोर बन चुका चंद्रमा आपके पद को अस्थायी कर देगा और शायद आपको बार–बार अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन देखने पड़ेंगे यदि आपकी कुंडली में कोई उत्तम योग नहीं है. अगर चंद्रमा किसी वक्री कुदरती अशुभ ग्रह के संयोग में है या उसके द्वारा प्रभावित हो रहा है. तब आपको बार–बार पिछड़ना पड़ेगा. जब भी आप एक कदम आगे बढाएंगे तो हालात कुछ ऐसे बनेंगे की आप एक बार फिर वहीं वापस आ जायेंगे जहां से आरंभ किया था. शायद आप बहुत सी यात्राएं करेंगे.

राहु

राहू आपके पांचवे घर में स्थित है. आप कुछ विषयों में फलदायक परिणामों का आनंद प्राप्त करेंगे. क्योंकि इस स्थिती में राहु योग कारक सा बरताव देता है. इससे आपको निश्चित रूप से भौतिक सुख प्राप्त होंगे. इन सुखों की मात्रा में और भी वृद्धी होगी अगर राहू वृषभ या कन्या या धनु या कुंभ राशी में स्थित है. मगर राहु, धनु राशी में उपयुक्त परिणाम नहीं देता है अगर मार्स भली प्रकार स्थित नहीं है या यह ज्यूपीटर या वीनस के संयोग में या प्रभाव में नहीं है तब. यदि मरक्यूरी भली प्रकार स्थित है तो आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और अगर मरक्यूरी, राहु से केंद्रस्थिती में है तब आप शिक्षा में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे. यदि राहु, वीनस के नक्षत्र में स्थित है तब शायद इससे आपके कई प्रेम–संबंध बनेंगे. मगर यदि प्राकृतिक अशुभ ग्रह राहु के साथ स्थित है या इसे प्रभाव दे रहा है तब आपके की प्रेम संबंध हो सकते हैं. इसके अलावा आपको व्यापार आदी में घाटे उठाने पड़ेंगे और शायद आपको नशे की लत भी पड़ जाए. हो सकत है कि आपको पारिवारिक जिम्मेदारीयां उठाना पसंद न हो और आप अपनी जिम्मेदारियों से भागनेवाले किस्म के व्यक्ति बन जायें. शायद इसी कारण आप शादी नहीं करेंगे.

केतु

केतू आपके ग्यारहवें घर में विराजमान है. आपकी के द्वारा की जानेवाली आमदनी सीमित होगी अगर आपका ग्यारहवां स्वामी भले ढंग से स्थित नहीं है. मगर यदि कोई कुदरती शुभ ग्रह केतू के साथ है या इसपर अपना असर दे रहा है तो स्थिती में सुधार होंगे. यदि वीनस या आपका सातवां स्वामी भले ढंग से स्थित नहीं है तो आपको विवाह का सुख प्राप्त नहीं होगा क्योंकि शायद आपकी इच्छा साधू, सन्यांसी बनने की रहेगी और यदि आपका विवाह हो भी जाता है तो यदि ज्युपीटर या आपका पांचवा स्वामी भली प्रकार स्थिर नहीं है तब इस स्थिती से आपको संतान प्राप्ती में दिक्कतें आ सकती हैं. फिर भी यह स्थिती आपको कंम्प्यूटर के क्षेत्र से प्रसिद्धी दिलाती है. यह सारे लक्षण और भी बढ़ेंगे यदि भली प्रकार से स्थापित मरक्यूरी इसके साथ है या इस पर अपना असर दे रहा है. यदि इस योग में अपना आठवां स्वामी भी ऐसे ही स्वभाव का है तो यह शायद आपको ज्योतीषी बनाएगा, जिसमें शायद आप कुछ नाम भी कमायेंगे. यह स्थिती आपकी माताजी की सेहत और कुशलता के लिए उपयुक्त नहीं है. विंशौत्तरी दशा या ग्यारहवें स्वामी की युक्ति के दौरान आपके सामने कई गंभीर समस्यायें आयेंगी और यदि चौथा घर केवल अशुभ ग्रहों के प्रभाव में है तब आपका अपने देश में कोई भविष्य नहीं रह जाएगा. अगर केतू दूसरे स्वामी के करीब स्थित है तब (यदि आप पुरूष है और आपके समुदाय में इसपर पाबंदी नहीं है) शायद आप हैवी स्मोकर अर्थात बहुत ज़्यादा सिगरेट पीनेवाले बनेंगे. यदि केतू जो है वह जूपीटर के संयोग में है या उसके प्रभाव में है या गुरु के तारा मंडल में है तब शायद आप पवित्र प्राचीन साहित्यों के लालसी पाठक बनेंगे और अपनी अधेड़ उम्र में धार्मिक बन जायेंगे.

इन्द्र

नेपच्यून आपके छठे घर में स्थित है. इससे शायद आपको किसी कष्टकारी समस्या या किसी उलझी

हुई स्थिती का सामना करना पड़ेगा. आपके कुछ रिश्तेदारों का बरताव अनचाहा रहेगा और उनका यह बरताव आपकी नाराजगी का कारण बनेगा. आपके कार्यकर्ता या कर्मचारी शायद विश्वासघाती और धोखेबाज बन जायेंगे. इससे वह आपके लिए चिंता का विषय बन जायेंगे और शायद अपनी दुष्ट योजनाओं या दुष्ट कार्यों द्वारा वे आपके लिए नुक्सान का कारण भी बन जायेंगे. यदि कोई प्राकृतिक शुभ ग्रह इसके साथ स्थित है या प्रभाव दे रहा है, तब आप शायद कुछ बलिदानों या समझौते के बाद सब कुछ ठीक कर लेंगे. मगर यदि कोई प्राकृतिक अशुभ ग्रह इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है, तब स्थिती बद से बदतर होती जाएगी और शायद इससे आपकी सेहत पर भी बुरा असर पड़ेगा. यदि नेपच्यून कर्क या मीन या वृश्चिक राशी में है, तब यह बेहतर परिणाम देगा. यह स्थिती नियुक्ति प्राप्त करने के लिए और विदेशी सहयोग द्वारा लाभप्राप्ती के लिए बहुत अनुकूल है

वरुण

नेपच्यून आपके पांचवे घर में स्थित है. आप इन्द्रीयजनित स्वभाव के बनेंगे और अस्त–व्यस्त या आप्राकृतिक गतिविधियां रखेंगे. आपकी यह आदतें प्रेम संबंधो में परेशानियां पैदा कर सकती हैं. शायद आप में अवैध संबंधो के प्रति भी लालच रहेगा और शायद इन कारणों से आपको बड़ी उलझी हुई परिस्थितियों का सामना करना होगा. यदि किसी प्रकार से पांचवा स्वामी भली प्रकार स्थित है या प्राकृतिक शुभ ग्रह इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है तब दशा में उल्लेखनीय रूप से सुधार आयेंगे. मगर यदि पांचवा स्वामी गलत स्थित है या प्राकृतिक अशुभ ग्रह इसके साथ है या प्रभाव दे रहा है तब आपमें व्याभिचारी इच्छायें आदतें हो सकती हैं. यदि आठवां घर और या बारहवां घर, प्राकृतिक अशुभ ग्रहों का प्रभाव सहन कर रहे है तब आपको शायद कुछ असहनिय देखना पड़ेगा, जो कि काफी समय से आपकी घात में लगा होगा.

रुद्र

क्योंकि प्लूटो आपके चौथे गृह में स्थित है तो हो सकता है कि जीवन के आरंभिक दौर में ही आपको मुसीबतें घेरना शुरू कर देगी. शायद आपके माता–पिता अलग हो जायेंगे. अगर ऐसा नहीं हुआ तो आपका घरेलू वातावरण बचपन से ही आपके दिमाग में कुछ न मिटनेवाली बुरी यादों की छाप छोड़ देगा. आपको अन्य लोगों के साथ संपत्ति–विवाद को लेकर परेशानियां पैदा होगी और वे आपको अपना निर्णय निर्दयी और बेरहम भाषा से समझाएगें. इस कारण आपको सावधान और सतर्क रहने की जरूरत होगी. यदि किसी प्रकार चौथा स्वामी भली प्रकार स्थित है या फिर प्राकृतिक शुभ ग्रह चौथे गृह में स्थित है या प्रभाव दे रहा है तब हालातों में उल्लेखनीय सुधार पैदा होंगे. मगर यदि चौथा गृह स्थिती द्वारा प्रभावित हो रहा है या सैटर्न के या मार्स के प्रभाव में है और अगर सांतवा गृह और आठवां गृह केवल प्राकृतिक अशुभ ग्रह के प्रभाव में है तो आपको अपनी सुरक्षा करने की विशेष जरूरत है क्योंकि खतरे आपकी राह में चारों ओर बिछे होंगे.

जन्म नक्षत्र फल

नक्षत्र फल

आप सदव्यवहारी होंगी तथा सामान्यतः आपको मानसिक शान्ति सुलभ रहेगी किन्तु आप अति व्यय करने वाली हो सकती हैं. आप कुशाग्र बुद्धि तथा दूसरों के प्रति सहायक होंगी. दूसरों की सूक्ष्म त्रुटियों को ढूंड निकालने में आपका तीव्र रूझान होगा. संभावाना रहती है कि आपके पिता अथवा आपकी माता को दूसरा विवाह करना पड़ जाऐ. यदि लग्न अश्विनी में है तो ये संभावना बढ़ जाती है.

शारिरिक सरंचना

आपकी शारीरिक आकृति आकर्षक होगी. आपकी मुस्कान मोहिनी, आंखे सुन्दर तथा नाक तीखी होगी.

शिक्षा

ल्वन ूपसस ंजजंपद ं हववक समअमस व िकपेजपदबजपवद पद जीम पिमसक व िमकनबंजपवद वत ेबपमदबमण स्पाम उवेज व िजीम ।तकतं इवतद मिउंसमेए लवन ूपसस ेचमबपंसप्रम पद ेनइरमबजे वत पिमसक तमसंजमक जव मसमबजतवदपबे ंदक चींतउंबमनजपबंसण च्मवचसम ूवनसक ेममा लवनत अंसनंइसम ंकअपबम ंदक बवदेनस वद अंतपवने उंजजमतेण

पारिवारिक जीवन

इस नक्षत्र में जन्मे पुरूषों की भांति आप का विवाह भी देर से होने की संभावना है. आप अपने पति एवं उसके परिवार से प्रेम प्राप्ति की विशेष इच्छा रखती हैं. आपके वैवाहिक जीवन में कई समस्याऐं एवं कठिनाईयां आ सकती हैं. आपको पति से अलग होने की स्थिति का भी सामना करना पड़ सकता है.

स्वास्थ

आपको मासिक धर्म से सम्बन्धित समस्या आ सकती है. आपको छाती, फेफड़ों तथा रक्त सम्बन्धी विकारों तथा अन्य कई चिकित्सावस्थाओं का सामना करना पड़ सकता है. यदि आप इस नक्षत्र में रजस्वला हुई हैं तो आप वासनायुक्त, आवेगपूर्ण तथा भावुक होंगी किन्तु आपको इन तत्वों के प्रवाह में बहना नहीं चाहिए वरन इन्हें अपने लाभ एवं कल्याण हेतु प्रयुक्त करना चाहिए.

रवि –– चित्रा –– चरण –– 1

आप यांत्रिक विज्ञान के विशेषज्ञ होंगे आप अपनी पत्नी के प्रति अत्यन्त स्नेह पूर्ण तथा विचारवान होंगे, आप पर्याप्त धनधान्य से आशिर्वादित होंगे, यदि लग्न स्वाति विशाका या अश्लेषा नक्षत्र में है तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि नहीं है तो परिणाम प्रतिकूल हो सकते हैं.

बुध –– उत्तर फाल्गुनी –– चरण –– 4

आप साधन सम्पन्न होंगे, सम्भव है कि प्रारम्भ में आप लेखा या वित्त अधिकारी के रूप में कार्यरत हो किन्तु आयु के पचासवें वर्ष में आप नौकरी छोड़ कोई अन्य कार्य (विशेषतः एक ज्योतिष अथवा धार्मिक पुस्तको के लेखक के रूप में) कर सकते हैं.

शुक्र –– उत्तर फाल्गुनी –– चरण –– 2

यदि इस चरण में लग्न भी है तथा आपका राहु रेवती नक्षत्र में है तो आपके शरीर में या बायें कान में एक चिन्ह होगा आर्थिक रूप से आप सदा ही कठीन स्थिति में रहते है, अनावश्यक मतभेदो तथा असामन्जस्यो से बचने के लिए आपको अवश्य ही और अधिक उदार तथा समझौता वादी बनना चाहिए, आप दवा बेचने के व्यापार से जुडे हो सकते है या एक कृषी वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत हो सकते हैं.

मंगल –– पुनर्वसु –– चरण –– 4

यदि आप महिला हैं और इस चरण में स्थित आपके मंगल पर शनि की दृष्टि है तो आपके शारीरिक स्वास्थ को विशेष देखरेख की आवश्यकता होगी. यदि आप पुरूष हैं तो आप जीवन का सम्पूर्ण आनन्द उठाएगें किन्तु वाहन चालन के समय आपको सतर्क रहना पड़ेगा. आपको सलाह है कि वाहन चलाते समय या वाहन से यात्रा करते समय किसी भी प्रकार का अनावश्यक जोखिम न उठायें. आपको रक्त सम्बन्धी विकार तथा अन्य संक्रमण हो सकते हैं.

गुरु –– श्रवण –– चरण –– 4

आपका स्वभाव अत्यधिक स्पष्टवादी तथा बेधड़क होगा किन्तु आपके विचार उदार होंगे. आप शीघ्र आवेश में आ जाते हैं तथा अपके विचार भटक सकते हैं. ३२ वर्ष की आयु तक आपके हिस्से समस्याऐं आती हैं किन्तु ३७ वें वर्ष के उपरान्त आप स्थायित्व का अनुभव करते हैं.

शनि –– उत्तर फाल्गुनी –– चरण –– 3

यदि शनि इस चरण में है तथा लग्न उत्तर भाद्रपद में है तो आपके पति अत्याधिक स्वस्थ्य होंगे और वह रहस्य शास्त्र में रूचि रख सकते हैं तथा छिपे हुए प्राचीन विज्ञानों की खोज में रत रह सकते हैं.

चन्द्र –– अरिद्रा –– चरण –– 4

आपके अति व्ययी होने की संभावनायें हैं. आप अपनी शिक्षा विभिन्न संस्थानों में ग्रहण करेंगे. आपका रूझान धार्मिक तथा आध्यात्मिक होगा. आप उचित साधनों से अपनी धन–सम्पदा अर्जित करेंगे, किन्तु इस बात की आवश्यकता है कि आप परिवारिक जीवन का आनन्द उठायें तथा विचारों में अन्तर होने के कारण उठे विवादों से स्वयं को विचलित न होने दें. चन्द्रमा के इस चरण में होने पर आपकी पत्नी घरेलू उत्तरदायित्वों का भार उठाने में आपकी सहायता करती है. यदि आप महिला हैं तो एक पत्नी के नाते आप अपने पति को उनके कार्यव्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति करने हेतु प्रोत्साहन देती हैं. यह स्थिति संकेत देती है कि पति–पत्नी दोनों ही लगभग समान स्तर के रोजगार में कार्यरत हो सकते हैं.

राहु –– उत्तर आषाढ़ –– चरण –– 3

आपका कद मध्यम होगा, आपने अनैतिक तथा कुटिल मित्रों की संगति से दूर रहना चाहिए, आप धन – सम्पत्ति को आवश्यकता से अधिक महत्व देते हैं तथा जितना आप के पास होगा, उससे अधिकाधिक पाने के लिए मचलते रहते हैं, आपको यह जान लेना चाहिए कि जो कुछ आपके पास है उसे अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ बांटने में ही वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होगी, यदि इस चरण में राहु अकेला है तो अपने परिवार के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं, परिस्थितियॉ आपको मकान छोड़ने के लिए भी विवश कर सकती हैं.

केतु –– पुनर्वसु –– चरण –– 4

आपको कठोर परिश्रम करना पड़ता है किन्तु फल सदैव ऐसे नहीं होते जैसी अभिलाषा की गई हो. केतु के यहां स्थित होने से आपके एक अच्छे श्रमिक, पोर्टर या अन्य किसी प्रकार का शारीरिक श्रम

करने वाले कर्मचारी बनने की संभावनायें हैं किन्तु आपके बच्चे शैक्षिक योग्यता एवं धन सम्पदा प्राप्त करेंगे. वृद्धावस्था में आपको अपने बच्चों से उचित सम्मान, देखरेख, सहानुभूति तथा स्नेह मिलेगा.